ISSN- 2395-1699

निरयणं दृक्तुल्यञ्च केतकीपक्षसम्मतम्। नैसर्गिकं हि पञ्चाङ्गं भारते भासतां सदा॥

भारतीय शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य निरयण चित्रापक्षीय

# नैसर्गिक-पञ्चाङ्गं

राजा-बुध

विक्रमसंवत् - २०७७

कलिसंवत् - ५१२१

मन्त्री-चन्द्र

शकसंवत् - १९४२

ईसवीय - २०२०-२०२१

प्रधान सम्पादक - प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय सम्पादक - प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

सह सम्पादक - डॉ. अशोक थपलियाल

प्रकाशक - नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, नई दिल्ली-१६

**प्रधान सम्पादक**

**प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय**

अध्यक्षचर ज्योतिष विभाग, पूर्वसंकाय प्रमुख-सं.वि.ध.वि.संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

**सम्पादक एवं गणितकर्त्ता**

**प्रो० देवीप्रसाद त्रिपाठी** (अवैतनिक)

कुलपति, उत्तराखण्ड़ संस्कृत विश्वविद्यालय
हरिद्वार, उत्तराखण्ड़

© सम्पादक

**प्रबन्ध सम्पादक**

**प्रो० मीनाक्षी मिश्र**

(अवैतनिक)
आचार्या, शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली-110016

**सहसम्पादक**

**डॉ० अशोक थपलियाल**

(अवैतनिक)
सहाचार्य एवं अध्यक्ष, वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली-110016

**प्रकाशन सहायक-** डॉ.प्रवेशव्यास, डॉ.देशबन्धु (अवैतनिक)
**सम्पादन सहयोग-** मृत्युञ्जय त्रिपाठी, भगवतीप्रसाद त्रिपाठी, डॉ. योगेन्द्रकुमार शर्मा, डॉ.दीपक वशिष्ठ, डॉ.नवीन पाण्डेय,अव्यक्त रैणा,अश्वनीकुमार

**प्रकाशक**

नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई,
RZG-271, पालम कॉलोनी नई दिल्ली-77

**मुख्य कार्यालय**

नैसर्गिक शोध संस्था
38 मानस नगर कालोनी, वाराणसी-5

**प्रकाशन वर्ष** - 2020 ई., **पुष्प** - षष्ठ **मूल्य** - रु. 70/-

उपहार

## पंचांग परिचय

### अक्षांश 28°39° N, रेखांश 77°12°E, पलभा 06°33°

भारतवर्ष में सम्प्रति विभिन्न पद्धतियों से पंचांग निर्माण होता है। इनमें तिथ्यादि के मानों में विसंगति के कारण व्रत पर्वोत्सव में भी विसंगतियां दृष्टिगोचर होती हैं। इस विषय में ध्यातव्य है कि हमारे ऋषि-महर्षियों एवं आचार्यों ने सदैव ही दृक्तुल्य गणित का समर्थन किया है। ऋषि वसिष्ठ का कथन है कि -

**यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।**
**दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम्॥**

इसी प्रकार प्रसिद्ध आर्षग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त कालभेदानुसार गणित में अन्तर को - **युगानां परिवर्तनेन कालभेदोऽत्र केवलः** कहकर दृक्तुल्यता का ही समर्थन करता है। यथा -

**तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।**
**प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्॥**

एवमेव भास्कराचार्य द्वितीय, आचार्य गणेश दैवज्ञ आदि प्रायः सभी सिद्धान्त ज्योतिष के महान आचार्य दृक्तुल्य गणित को ही विवाहादि संस्कारों तथा व्रत-पर्वोत्सवादि कार्यों के लिए आवश्यक मानते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह पंचांग दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकीय ग्रहगणितीय पद्धति पर दिल्ली के अक्षांश एवं रेखांश के अनुसार निर्मित है।

इस पंचांग में तिथि, नक्षत्र, योग और करण के आगे निर्दिष्ट घटी व पल तत्सम्बन्धी तिथ्यादि के सूर्योदय के बाद की स्थिति को बताता है। इसी प्रकार तिथि व नक्षत्र के घटी पल के आगे निर्दिष्ट घण्टा मिनट उसके समाप्ति काल को प्रदर्शित करता है। इस पंचांग में प्रयुक्त घण्टा व मिनट मान भारतीय स्टैण्डर्ड समय अर्थात् रेडियो टाइम के अनुसार दिये गये हैं। अतः इस पंचांग के समय को भारत में अपनी घडी के अनुरूप मिलाकर समय का अनुपालन कर सकते हैं। इस पंचांग में दिए गए मान यथासम्भव विशुद्ध देने के प्रयास किए गए हैं। फिर भी यान्त्रिकीय एवं मानवीय त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं। अतः पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों पर ध्यान न देते हुए पंचांग के उपयोगी तथ्यों को ग्रहण करेंगे। यतः -

**गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।**
**हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥** - सम्पादक

# विषय सूची


| क्र. | विषय | पृष्ठसंख्या |
|---|---|---|
| 1. | पञ्चांग परिचय | 01 |
| 2. | मंगलवाक् | 03 |
| 3. | संवत्सरादिफलम् | 04–08 |
| 4. | वार्षिकराशिफल | 09–37 |
| 5. | सायन सूर्य राशि व नवग्रहस्तोत्रम् | 37 |
| 6. | ग्रहण विवरण(2018–19) | 38 |
| 7. | ग्रहों का राशि प्रवेश काल | 39 |
| 8. | ग्रहों का नक्षत्र प्रवेश काल | 40 |
| 9. | व्रत, पर्व एवं उत्सवादि | 41–45 |
| 10. | सूर्यसंक्रान्तिपुण्यकाल | 45 |
| 11. | विविध शुभ योग | 46–48 |
| 12. | पंचाग–तिथ्यादिविवरण | 49–74 |
| 13. | औदयिक स्पष्टग्रह | 75–88 |
| 14. | ग्रहों का उदयास्त विचार | 89 |
| 15. | ग्रह मार्गी–वक्री विचार | 89 |
| 16. | अक्षांश–रेखांश सारिणी | 90–96 |
| 17. | ज्योतिषमाहात्म्यम् | 96 |
| 18. | क्रांति सारिणी | 97 |
| 19. | चरसारिणी | 98–99 |
| 20. | वेलान्तर सारिणी | 100 |
| 21. | दैनिक लग्नसारिणी | 101–112 |
| 22. | दिल्ली अक्षांश की लग्नसारिणी | 113 |
| 23. | दशमलग्नसारिणी | 114 |
| 24. | मुहूर्त्त हेतु काल विवरण | 115 |
| 25 | विवाह मुहूर्त्त | 116–117 |
| 26. | गोधूलि प्रशंसा | 117 |
| 27. | वधूप्रवेश मुहूर्त | 118 |
| 28. | द्विरागमन मुहूर्त | 118 |
| 29. | प्रसूतास्नान मुहूर्त | 118–120 |
| 30. | नामकरण मुहूर्त | 120–122 |
| 31. | अन्नप्राशन मुहूर्त | 122 |
| 32 | चूडाकर्म मुहूर्त | 123 |
| 33. | कर्णवेध मुहूर्त | 123–124 |
| 34. | उपनयन मुहूर्त | 124 |
| 35. | अक्षरारम्भ व विद्यारम्भ मुहूर्त | 124–125 |
| 36. | विपणि मुहूर्त | 125–126 |
| 37. | सर्वदेवप्रतिष्ठामुहूर्त | 126–127 |
| 38. | हलप्रवहण मुहूर्त | 127–130 |
| 39. | बीजोप्ति मुहूर्त | 130–132 |
| 40. | गृहारम्भ मुहूर्त | 132 |
| 41. | गृहप्रवेश मुहूर्त्त | 132–133 |
| 42. | ग्राम वास विचार | 134 |
| 43. | विविध मुहूर्तों का विचार | 134–145 |
| 44. | खात व काकिणी विचार | 145 |
| 45. | विभिन्न शुभाशुभ योग विचार | 146 |
| 46. | गण्डमूल बोधक चक्र | 146 |
| 47. | षोडश कक्ष विचार | 146 |
| 48. | विंशोत्तरी दशा–अन्तरदशा चक्र | 147 |
| 49. | योगिनी दशा–अन्तरदशा चक्र | 147 |
| 50. | ग्रहमैत्री एवं उच्च–नीच विचार | 147 |
| 51. | कुण्डलीस्थ ग्रह फल | 148 |
| 52. | गोचर वश ग्रह फल | 149 |
| 53. | वर्ष–कुण्डली के ग्रह फल | 149 |
| 54. | शतपद चक्र | 150 |
| 55. | मेलापक विचार | 151 |
| 56. | मेलापक सारिणी | 152–155 |
| 57. | वर्षफल निर्माण विधि | 156–160 |
| 58. | गोदान विधि | 161–167 |
| 59. | यज्ञोपवीत धारण विधि | 167–168 |
| 60. | सन्ध्याविधि | 169–172 |
| 61. | षोडशोपचार पूजन विधि | 173–179 |
| 62. | तर्पण प्रयोग | 179–184 |
| 63. | पुरुषसूक्त,श्रीसूक्त,रुद्रसूक्त | 185–187 |
| 64. | चौघड़िया मुहूर्त्त | 188 |
| 65. | अग्निवास व शिववास विचार | 188 |
| 66. | गण्डमूल नक्षत्र–चरण फल | 188 |
| 67. | सूर्योदय व इष्टकाल साधन | 189–190 |
| 68. | ग्रहदान वस्तुएं व अंगस्फुरण फल | 191 |
| 69. | नवग्रह शांति उपाय | 192 |

# संवत्सरादिफलम् 2020-21 ई.

| | | | |
|---|---|---|---|
| कलियुगाब्द | ५१२१ | ईसवी सन् | २०२०-२१ |
| फसली | १४२७-२८ | शालिवाहन शक | १९४२ |
| हिजरी | १४४१-४२ | विक्रम संवत् | २०७७ |
| सप्तर्षिसंवत् | ५०९६ | महावीरजैननिर्वाणसंवत् | २५४५-४६ |
| श्रीबुद्धसंवत् | २६४३-४४ | भारतीय गणराज्यवर्ष | ७०-७१ |

**वर्षाविकृत्य -**

**अब्दादौ प्रातरुत्थाय दन्तधावनपूर्वकम् ।**

**स्नानं सन्ध्याविधिं कृत्वा वर्णाचारक्रमेण तु ॥**

**अब्दादौ मित्रसंयुक्तो मङ्गलस्नानमाचरेत् ।**

**वस्त्रैराभरणैर्देहमलङ्कृत्य ततश्शुचिः ॥**

**अब्दादौ ग्रहपूजाञ्च पूजाञ्च चिरजीविनाम् ।**

**मिष्टान्नेन द्विजान् बन्धून् पितश्न् सन्तर्पयेत्ततः ॥**

वर्षारम्भ के दिन प्रातःकाल में दन्तधावनादि कार्योपरान्त मंगलस्नान करके सन्ध्यादि कृत्य पूरा करने के बाद नववस्त्र धारण करके ग्रहादि का पूजन करना चाहिए। साथ ही बन्धुजन, ब्राहम्ण और पितरों को मिष्टान्नादि से संतश्प्त करना चाहिए।

**प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगश्हे कुर्याद्ध्वजारोपणम् ।**

**स्नानं मङ्गलमाचरेद् द्विजवरैः सार्धं सुपूजोत्सवम् ॥**

**देवानां गुरुयोषिताञ्च विभवालङ्कारवस्त्राविभिः ।**

सम्पूज्यो गणकः फलञ्च श्रुणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम् ॥

**परिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः ।**

**सुपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः ॥**

**मरीचिलवणं हिंगुजीरकेण च संयुतम् ।**

**अजमोदयुतं कृत्वा भक्षयेद् रोगशान्तये ॥**

**यद् वर्षादौ निम्बसुमं शर्कराम्लघृतैर्युतम् ।**

**भक्षितं पूर्वयामे स्यात् तद्वर्षं सौख्यदायकम् ॥**

**संवत्सरावि फल श्रवण का माहात्म्य-**

**राज्यं स्यादचलं नश्पश्रवणतो मन्त्रीश्रवात् कौशलम् ।**

**धान्येशात् कमला स्थिरा च सुरसा वाणी भवेन्मेघपात् ॥**

**धर्मे बुद्धिरधिष्ठता रसपतेर्दीर्घायुषत्वं भवेत् ।**

**सस्येशाद् विमला मतिः शुभकरी वर्षावली श्रूयताम् ॥**

वर्षारम्भ में संवत्सर के राजा का फल सुनने से राज्य स्थिर होता है। मत्री का फल सुनने से कुशलता बढ़ती है। धान्येश का फल श्रवण से लक्ष्मी स्थिर होती है। मेघपति का फल सुनने से वाणी रम्या होती है। रसपति के फल श्रवण से दीर्घायु मिलती है। अतः शुभ एवं कल्याणकारी वत्सरावली का श्रवण करना चाहिए।

**संवत्सरादि फलश्रवणविधि-**

**उदङ्मुखः प्राङ्मुखो वा दैवज्ञस्य तु सन्निधौ ।**

**विघ्नेशं भारतीं खेटान् दैवज्ञं ब्राह्मणान् गुरून् ॥**

**सम्पूज्य वत्सरफलं साङ्गोपाङ्गं यथाक्रमम् ।**

**विकासववदनो भूत्वा ब्रह्मणो जन्मतः फलम् ॥**

**अब्दाधीशचमूनाथसस्यापानां बलाबले।**

**तत्कालग्रहचारांश्च सम्यक् ज्ञात्वा फलं लभेत।**

दैवज्ञ के समीप में पूर्वमुख यां उत्तरमुख होकर गणेश,सरस्वती,नवग्रह,गुरू,ब्राह्मण आदि का पूजन करके सांगोपांग वर्ष का फल सुनना चाहिए।

**ब्रह्मायुर्निरूपणम्** - श्रीमद्भगवतो विष्णोः नाभिकमलोद्भवस्य ब्रह्मणो ब्राह्ममानेन परमायुः १०० वर्षाणि। ३११०४०००००००००० सौरवर्षाणि ब्रह्मणः परमायुः। ब्रह्मणः जन्मादिगतसौरवर्षाणि १५५५२१९७२९४९१२१ कल्पादितः गतसौरवर्षाणि १९७२९४९१२१ सृष्ट्यादितः गतवर्षाणि १९५५८८५१२१ अथ ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे

१ माणिक
२ गेहूँ
३ धेनु
४ कुसुंभा
५ सुवर्ण
६ ताम्र
७ रक्त पु.
८ धृत
९ गौ

मध्येवर्तुल म. अ. १२ कलिंगदेश काश्यप गोत्र रक्तवर्ण ५ रा. स्वा. जप ७०००

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

१ वंशपाल
२ तंदुल
३ कपूर
४ मोती
५ श्वेत व.
६ वृषभ
७ रौप्य
८ शंख
९ धृतकुंभ

आग्नेयां चतुरस्रमंडले यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण अंगुल ४ रा. कर्क- स्वामी जप ११०००



ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः

१ प्रवाल
२ गेहूँ
३ मसूर
४ वृषभ
५ ताम्र
६ गुड
७ कर पु.
८ रक्त व.
९ सुवर्ण
रक्त चंदन

दक्षिणेत्रिकोणाकारमंडले अवंतिदेश भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण १८ रा. स्वामी जप १००००

ॐ क्रां क्रीं क्रौंस भौमाय नमः

१ वस्त्र
२ नीलव
३ सुवर्ण
४ कास्य
५ मृग
६ आज्य
७ पंचरत्न
८ दासी
९ हस्ती

ईशान्ये बाणाकारमंडले मगधदेश आत्रैयसगोत्र पीतव. ३६ रा. स्वा. अ. जप ८०००



ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

सर्वांग सुन्दर दैनिक लग्न सारणी एवं ग्रह स्पष्ट
युक्त केतकी चित्रापक्षीय ( दृग्गणित )

## श्री संवत् २०७८ का महीधर कीर्तिपञ्चांग

शकः १९४३ सन् २०२१-२०२२

प्रवर्तक पं० महीधर शर्मा धर्माधिकारी उ०धि० पं० रोहणीधर शर्मा
कर्त्ता पं० मेदिनीधर शर्मा, ध०धि० उत्तराधि० पं० पृथ्वीधर शर्मा
जिला टिहरी गढ़वाल ( उत्तराखण्ड )

१ सर्करा
२ हरिद्रा
३ अश्व
४ पीतधा
५ परत व.
६ पुष्पस
७ लवण
८ कांच
९ सुवर्ण

उत्तरे दीर्घचतुरस्रमंडले अ. ६ सिंध देश अंगिरस गोत्र पी. घण ९।१२ जप १९०००



ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः

१ चित्र व
२ श्वेतघो
३ धेनु
४ हीरा
५ रौप्य
६ सुवर्ण
७ तंदुल
८ भक्ष्यक
९ सुगंधी

पूर्वेपंचकोणमंडलाकारे २।७ रा. स्वा. भो. कटदेशभार्गवगोत्रश्वेतवर्ण जप. ११०००

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

१ माष
२ तिल
३ तैल
४ कुलित्थ
५ महिषी
६ लौह
७ दक्षिणा
८ इंद्रनील
९ कृणाव
१० गौ

पश्चिमे धनुषाकार मं. अ. २ सौराष्ट्र देश काश्यपगोत्र कृष्ण व. १०।११ रा.स्वामी जप २३०००
कटदेशभार्गवगोत्रश्वेतवर्ण जप. ११०००



ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः

१ मेद्य
२ रत्नगो
३ अश्व
४ नील व
५ कंवल
६ तिल
७ तैल
८ लौह
९ अभ्रक
१० सुता

नैऋत्ये शूर्पाकामंडले अ. १२ राठीन शपठीनसगोत्र धूम्रवर्ण जप १८०००

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

१ वैडूर्य
२ तिल
३ तैल
४ कंवल
५ कस्तूरी
६ शंख
७ कृष्ण
८ माष
९ गोधूम

पवायव्ये ध्वजाकार मंडलेअ० आवंतिदेश जैमिनसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००

ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

माहीधरीदं पञ्चांग देशान्तरे। संस्कृत्याभीष्ट देशीयं भविष्यति न संशय॥

वर्ष १३८

## पञ्चांग प्रवर्तक



पं० महीधर शर्मा धर्माधिकारी
१४ फरवरी १८४९ - १५ मई १९१५

**समर्पणम् :** महीधरो कीर्ति पञ्चाङ्ग गढ़ाधिपति श्री १०८ सत्कीर्तिशाली महाराज कीर्तिशाह बहादुर के०सी०एस०आई० के जगच्चिरस्मरणीय नाम से श्री संवत् १९४१ से प्रचलित है, तथा साम्प्रत में गढ़ाधिपति स्वस्ति श्री १०८ बदरीश चर्य्यापरायण परम भट्टारक श्री १०८ श्री मन्म महारा[illegible] देव-मानवेन्द्र शाह देव-मनुजयेन्द्र शाह देव की छत्रछाया में प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाता है। अतः स्वर्गीय राजर्षि की जगच्चिरस्मरणीय कीर्ति के उपलक्ष में भिक्षुक को यह तुच्छ भेंट ज्योतिषी वृन्द के लाभार्थ बोलांदा बदरीश के कर कमलों में सादर समर्पित है।

## पञ्चांग एवम् आद्य गणितकर्ता

**पं० मेदिनीधर शर्मा धर्माधिकारी**

नरेन्द्रनगर, जिला टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

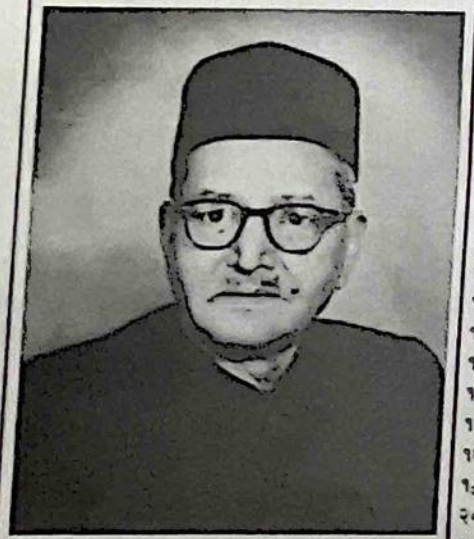



१६ मार्च १९०० - ३१ मार्च १९९६

## विषय सूची


| क्रम | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. | नवग्रह एवं जप संख्या | मुख पृष्ठ |
| २. | सम्पादकीय | १ |
| ३. | कीर्ति पचांग प्रवर्तक परिचय | २ |
| ४. | राशिफल २०२१-२२ | ३-२६ |
| ५. | संवत्सरादिफलम् शनि का साढ़ेसाती-ढैय्याविचार | २७-२९ |
| ६. | महाकुम्भ पर्व | ३० |
| ७. | मूल पचांग | ३१-५४ |
| ८. | व्रत एवं पर्व तालिका श्री सम्वत् २०७७ | ५५-५६ |
| ९. | सन् २०२१-२२ के सर्वार्थ सिद्धि योग एवं अन्य मुहुर्त आदि | ५७-६८ |
| १० | विवाह मुहुर्त सम्वत् २०७८ (२०२१-२२), ग्रहण विवरण | ६९-७४ |
| ११. | गोधुलि प्रशंसा | ७५ |
| १२. | यज्ञोपवीतधारण प्रयोग, अथ जन्मदिन पूजनम् | ७६-८० |
| १३. | विविध विषय सम्पन्न सर्वोपयोगी चक्रम/मूलादि जन्म फलम् | ८१ |
| १४. | तिथिवार नक्षत्र योग चक्र, वर्षफल प्रवेश सारिणी | ८२ |
| १५. | गढ़वाल लग्न सारिणी | ८३ |
| १६. | देश के मुख्य शहरों के अक्षांश-देशान्तर सारिणी | ८४ |
| १७. | उत्तराखण्ड के अक्षांश-देशान्तर सारिणी | ८५ |
| १८. | सप्तवर्ग चक्रम् | ८६ |
| १९. | त्रिवर्ग चक्रम् | ८७ |
| २०. | वर-कन्या गुण मेलाप सारिणी, होडा चक्रम सारिणी | ८८-८९ |
| २१. | क्रान्ति सारिणी एवं चरसारिणी | ९०-९१ |
| २२. | वेलान्तर सारिणी, ताजिके हड्डा चक्रम वास्तु प्रकरण | ९२-९३ |
| २३. | संस्कार प्रकरणम्, यात्रा मुहुर्त | ९४-९७ |


## श्री महीधर कीर्ति पंचांग की विशेषतायें

यह ख्याति प्राप्त पचांग विगत १३८ वर्षों से निरन्तर प्रकाशित हो रहा है और समाज के सभी वर्गों को तदसम्बन्धित वांछित जानकारी देता रहा है। जिन माननीय ज्योतिषियों, पुरोहितों, पण्डितों और उनके यजमानों ने इसे अपनाकर मार्ग दर्शन का माध्यम बनाया उसके लिये पचांग परिवार उनका ऋणी है। इस वर्ष संवत् २०७८ का यह १३८ वाँ प्रकाशन एक नवीन कलेवर और विशेषताओं के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. प्रत्येक दिवस की लग्न सारिणी उसी पक्ष-विवरण के साथ तिथिवार घण्टा-मिनट सहित अंकित की गई है। आशा है यह ज्योतिष प्रेमियों के लिये बहुत अच्छा प्रयोग प्रमाणित होगा।
२. प्रत्येक दिवस को तिथि, नक्षत्र, योग, करण आदि को घटी-पल तथा घण्टा-मिनट में दिखाया गया है।
३. चन्द्रमा का किस राशि में कब प्रवेश होगा, यह भी घटी-पल तथा घण्टा-मिनट में प्रदर्शित किया गया है।
४. देश/प्रदेश के प्रमुख त्यौहारों व पर्वों के नाम उसी तिथि के आगे दिखाये गये हैं। कहीं स्थानाभाव के कारण A,B,C.... तारांकित कर नीचे अंकित किये गये हैं।
५. नवरात्र आदि प्रमुख पर्वों की घटस्थापना का समय घण्टा-मिनट में दिखाया गया है।
६. प्रत्येक सक्रान्ति का वास्तविक नाम तथा उसके प्रारम्भ तथा समाप्ति का समय भी घण्टा-मिनट में स्पष्ट किया गया है।
७. पचांग के प्रकाशन में संस्कृत के सरल शब्दो/व्याकरण का प्रयोग हुआ है ताकि इसके उपयोगकर्ताओं को कठिनाई न हो।
८. ग्रहो की स्थिति स्पष्ट करने हेतु भी घण्टा-मिनट मे इंगित किया गया है।
९. पचांग मे विभिन्न पर्वों और व्रतों की तालिका अलग से दी गई है।
१०. पचांग मे पूरे वर्ष के मुहूर्तों की तिथियाँ अंकित की गई हैं।
११. ग्रहणों का आरम्भ व समाप्ति काल भी घण्टा-मिनट मे दिया गया है।
१२. इस पंचाग के अध्ययन से लगता है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसका उपयोग कर सकता है। श्री महीधर कीर्ति पचांग के सृजनकर्ताओं का उद्देश्य इसे जन-साधारण के लिये उपयोगी बनाना था।
१३. पचांग के उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिये कुछ विधियों/प्रक्रियाओं का भी इसमें समावेश किया गया है।

आशा है श्रीमहीधर कीर्ति पचांग अधिक उपयोगी प्रमाणित होगा। शुभम्।

शुभकामनाओं सहित।


महीधर कीर्ति पञ्चां[illegible]

**सम्पादकीय संरक्षक एवं [illegible]काशक**

पयोधर डंगवाल

महीधर कीर्ति पञ्चांग कार्या[illegible]

"मेदिनीष"

पो. ओ. नरेंद्रनगर, टिहरी गढ़वाल, उत[illegible]ड,

फोन 9812302564

**गणित कर्ता एवं सम्पादक**

प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (अवैतनिक)

कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्याल[illegible]

हरिद्वार-249402

**सह सम्पादक**

डॉ. अशोक थपलियाल (अवैतनिक)

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ

नई दिल्ली -110016

**शंका समाधान कर्ता**

डॉ. पण्डित धर्मानन्द मैठाणी, ज्योतिर्विद

फोन 09012968024

**एवं**

पण्डित रमा नन्द डबराल

आचार्य फलित ज्योतिष

फोन 08057080380

महीधर कीर्ति पञ्चांग के सम्पादन और प्रकाशन में डॉ. देशबन्धु शर्मा एवं डॉ. प्रवेश व्यास (श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली) द्वारा दी गई अवैतनिक सेवा के लिये हम उनके आभारी हैं।

## कीर्ति पंचांग प्रवर्तक
## पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी
### संक्षिप्त परिचय

प्रस्तुतकर्ता–एस० राजेन टोडरिया,
सम्पादक जनपक्ष आजकल, नई टिहरी (उत्तराखण्ड)

सुविख्यात ज्योतिष विद्या के प्रगाढ़ विद्वान सिद्ध तान्त्रिक एवं कीर्ति पंचाग के प्रवर्तक पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी उत्तराखण्ड के ही नहीं अपितु विश्व के सुप्रसिद्ध विद्वानों में एक प्रमुख स्थान रखते हैं। वे विश्व तान्त्रिक संघ जिसका मुख्यालय अमेरिका में था उसके अध्यक्ष भी रह चुके थे।

पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी का जन्म पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) के निकट ग्राम कोदार में १४ फरवरी १८४९ में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पौडी के निकट क्यकालेश्वर सस्कृत विद्यालय में हुई, और वहीं पर रहकर उन्होंने क्यकालेश्वर शिव–मन्दिर में उपासना कर तान्त्रिक शक्ति प्राप्त किया। टिहरी गढवाल के तत्कालीन नरेश श्री १०८ महाराज प्रताप शाह ने विलक्षण विद्वता और व्यक्तित्व को देखते हुए पण्डित महीधर शर्मा को अपना धर्म गुरु बना कर धर्माधिकारी की उपाधि से अलकृत और उन्हे धर्म से सम्बन्धित अपना निर्णय और दण्ड देने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। आज भी उनके वंशज को धर्माधिकारी की उपाधि का अधिकार प्राप्त है।

तत्कालीन गढ़वाल समाज मे ऐसे विद्वान व्यक्तियों का नाम से सम्बोधित करना उनके प्रति निरादर का भाव प्रकट करना था अतः इनको लाम्बा पण्डित जी के नाम से सम्बोधित करते थे क्योंकि इनकी लम्बाई लगभग ६ फीट से ऊपर थी।

पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी के पूर्वज पण्डित धर्मीधर जो अपने समय के बहुत बड़े विद्वान थे सन् ७२३ ए०डी० में कर्नाटक के सन्तोली क्षेत्र से श्री केदारनाथ, श्री बद्रीनाथ धाम की यात्रा पर आए। यात्रा से लौट कर वह गढवाल के तत्कालीन राजा को सम्मान देने के लिए उनकी राजधानी श्रीनगर स्थित राज–दरबार में पहुँचे। गढ़वाल के राजा इनकी विद्वता देखकर बहुत प्रभावित हुए और उन्हे श्रीनगर के निकट डौंग गौंव में १७ नाली भूमि जागीर में दिया जो आज भी सरकारी बन्दोबस्त मे इन्द्राज है। पण्डित धर्मीधर डौंग के निवासी हो जाने के कारण इनकी डैंगवाल कौन्डिल्य गोत्र जाति के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। आज भी गढवाल में अधिकतर गौंव जाति के नाम से या जाति गौंव के नाम से प्रसिद्ध है। तत्कालीन सुप्रसिद्ध राजा श्री १०८ महाराज अजय पाल सिंह ने श्री देवलगढ स्थित अपनी कुलदेवी भगवती राज राजेश्वरी की पूजा–अर्चना करने का विशेष अधिकार इसी परिवार को दिया जो इसी वंश के पण्डित चक्रपाणी धर, पण्डित श्रुतिधर, पण्डित कीर्तिधर, पण्डित नीधीधर, पण्डित महीधर, पण्डित रोहणीधर, पण्डित मेदिनीधर, पण्डित पृथ्वीधर के जीवन काल तक चलता रहा। पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी जी की स्मरण–शक्ति विलक्षण थी। यह उन्हें एक ईश्वरीय वरदान बताया जाता है। ग्यारह वर्ष की आयु मे सभी संस्कृत के धर्म–ग्रंथ–अमर कोष–बालबोध–मुहूर्त चिन्तामणी आदि ग्रंथ कंठस्थ थे।

पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी अपने समय के बहुत महान प्रसिद्ध सिद्ध–तान्त्रिक, सिद्धि प्राप्त साधक थे। पूर्व न्यायाधीश एस०एन० काटजू के अनुसार वे विश्व तंत्र संघ जिसका मुख्यालय अमेरिका में था के सर्वोच्च निर्देशक रह चुके थे। बीसवी सदी के प्रारम्भ में अमेरिका का तान्त्रिक संघ इस तंत्र संघ से जुड गया जिसका मुख्यालय भारत में था।

सन् १९३१ मे अमेरिकी तंत्र–संघ के प्रधान पेयरी अर्नाल्ड बर्नाड ने अपने मित्र को पत्र लिखकर इस बात का उल्लेख किया था कि उनके गुरु सैलवीस हैमटी थे, जिनके पिता सीरियन और माता फ्रेंच थी, उन्होंने सैलवीस हैमटी को ६ वर्ष की आयु मे हिमालय पर योग और तंत्र–मंत्र का उच्च ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक भारतीय योगी के देख–रेख में सौंप दिया। सैलवीस हैमटी ने २० वर्ष तक इन्हीं भारतीय योगी से ज्ञान प्राप्त किया था। भारत से लौट कर सैलवीस हैमटी तंत्र ज्ञान के सर्वोच्च प्रशिक्षक और संघ के निर्देशक बन गए। पेयरी अर्नाल्ड बर्नाड ने सैलवीस हैमटी के भारतीय गुरु का नाम महीधर बताया था। इन्हीं महीधर का उल्लेख स्वामी रामतीर्थ ने श्रेष्ठतम चमत्कारी ज्ञानी के रूप में किया था। टिहरी रियासत के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश पण्डित शिवानन्द थपलियाल जी के विशेष आग्रह पर एक दिन अर्द्ध–रात्रि को पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी जी ने अपनी तान्त्रिक शक्तियों का प्रदर्शन किया। मार्ग–पौष के अर्द्ध–रात्रि के अन्धेरे में मुख्य न्यायाधीश पण्डित शिवानन्द थपलियाल जी यह देखकर अचम्भित हो गए कि उन्हीं के घर के दालान (चौक) में वीभत्स, अंग–प्रत्यंग, उल्टे–सीधे पाँव–दाँत वाले नर–नारियों के समूह में पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी अर्ध–नग्न होकर नृत्य कर रहे हैं। उनकी तंत्र शक्ति के ऐसे कई सौ उदाहरण हैं।

अपने जीवनकाल में पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी जी ने लगभग ३० ग्रन्थों की रचना की, जिनका सम्बन्ध संस्कृत, ज्योतिष, तंत्र ज्ञान, न्याय और कर्मकाण्ड से सम्बन्धित है। इनमें मुख्य ग्रंथ मंत्र महोदधि, कर्मकाण्ड समुच्चय, गंगा सागर, वृहत्त जातिका, मुहूर्त चिन्तामणि, नीलकण्ठ, केदार–नाथ माहात्म्य, गोरक्षा पद्धति आदि मुख्य हैं। कुछ हस्त लिखित पाण्डुलिपि अलमारी में बन्द पडी है। यह सभी ग्रंथ तत्कालीन समय में श्रीयुत खेमराज कृष्णदास श्री वेंकटेश्वर प्रेस मुम्बई के आधीन मुद्रित की गई।

पण्डित महीधर शर्मा धर्माधिकारी कीर्ति–पंचाग (जन्त्री) के प्रवर्तक भी रहे। उन्होंने सर्व–प्रथम यह पंचाग हस्त–लिखित (जन्म पत्री के रूप में) तत्कालीन टिहरी नरेश को सम्वत् १९४१ (सन् १८८४) से प्रतिवर्ष भेंट स्वरूप देते [illegible] कालान्तर में श्री 108 महाराज कीर्तिशाह बहादुर ने सम्वत् 1950 (सन् 1892) से अपने प्रभाव से [illegible] वेंकटेश्वर प्रेस मुम्बई, से छपवाने का प्रबन्ध [illegible] श्री 108 महाराज कीर्तिशाह बहादुर के [illegible] यह पंचाग आज भी कीर्तिपंचांग के नाम से [illegible] उत्तराखण्ड में प्रचलित है। पण्डित महीधर [illegible] धर्माधिकारी ने अपने समय में सम्वत् 20[illegible] सम्पूर्ण पचाग की पाण्डुलिपि अपने पौत्र [illegible] मेदिनीधर शर्मा धर्माधिकारी के लिए सम्वत् [illegible] (सन् 1915) में छोड़कर चल बसे। पण्डित महीधर शर्मा के पुत्र पण्डित रोहणीधर शर्मा धर्माधिकारी अपने समय में ख्याति प्राप्त मृदंग वादक थे।

पण्डित मेदिनीधर शर्मा धर्माधिकारी [illegible] जाने–माने कर्म–काण्डि, तंत्र शास्त्र के [illegible] धर्मशास्त्र और ज्योतिष शास्त्र के कुशल [illegible] उन्होंने महीधर कीर्ति पचाग में अपनी [illegible] अनुसार नए–नए ऐसे विषयों को सम्मिलित [illegible] जो जन–साधारण को लाभप्रद हो। पण्डित मेदिनीधर शर्मा धर्माधिकारी को पण्डित [illegible] मोहन मालवीय जी ने इन्दौर ज्योतिष सम्मेलन [illegible] ज्योतिषाचार्य की उपाधि से अलंकृत किया। आज भी पण्डित महीधर शर्मा, पण्डित मेदिनीधर [illegible] धर्माधिकारी के वंशज नरेन्द्रनगर, जनपद टिहरी गढवाल (उत्तराखण्ड) मे रह कर प्रतिवर्ष [illegible] कीर्ति पचाग को प्रकाशित कर जनहित की [illegible] संलग्न है।

।। इति शुभम्।।

ISSN– 2395-1699

निरयणं दृक्तुल्यञ्च केतकीपक्षसम्मतम्। नैसर्गिकं हि पञ्चाङ्गं भारते भासतां सदा॥

भारतीय शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य निरयण चित्रापक्षीय

# नैसर्गिक-पञ्चाङ्गम्

राजा-मंगल

विक्रमसंवत् - २०७८

कलिसंवत् - ५१२२

संरक्षक

प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय

सम्पादक

प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

नैसर्गिक शोध संस्था

दिल्ली इकाई, नई दिल्ली-१६

मन्त्री-मंगल

शकसंवत् - १९४३

ईसवीय - २०२१-२०२२

प्रधान सम्पादक

प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय

सह-सम्पादक

डॉ. अशोक थपलियाल

वास्तुशास्त्र विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय

( केन्द्रीय विश्वविद्यालय ) नई दिल्ली - 110016

संरक्षक

**प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय**

अध्यक्षचर ज्योतिष विभाग, सङ्काय प्रमुख-सं.वि.ध.वि.सङ्काय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

प्रधान सम्पादक

**प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय**

कुलपति, श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110016

सम्पादक एवं गणितकर्त्ता

**प्रो० देवीप्रसाद त्रिपाठी**

कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय
हरिद्वार, उत्तराखण्ड

© सम्पादक

प्रबन्ध सम्पादक

**प्रो० मीनाक्षी मिश्र**

आचार्या शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

सह सम्पादक

**डॉ० अशोक थपलियाल**

सहाचार्य एवं अध्यक्ष, वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

प्रकाशन सहायक-डॉ० देशबन्धु (सहा. आ.), डॉ० प्रवेश व्यास (सहा. आ.), डॉ० योगेन्द कुमार शर्मा( सहा. आ.),डॉ० दीपक वशिष्ठ( सहा. आ.)

सम्पादन सहयोग -श्री मृत्युञ्जय त्रिपाठी,श्री भगवती प्रसाद त्रिपाठी,श्री गोविन्द वल्लभ

प्रकाशक - वास्तुशास्त्र विभाग श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली-110016

नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, RZG-271, पालम कालोनी, नई दिल्ली
मुख्य कार्यालय - 38 मानस नगर कालोनी, वाराणसी-5

प्रकाशन वर्ष - 2021 ई., पुष्प -सप्तम मूल्य - रु. 75/-

## पञ्चाङ्ग परिचय

### अक्षांश 28°39° N, रेखांश 77°12°E, पलभा 06°33°

भारतवर्ष में सम्प्रति विभिन्न पद्धतियों से पञ्चाङ्ग निर्माण होता है। इनमें तिथ्यादि के मानों में विसंगति के कारण व्रत पर्वोत्सव में भी विसंगतियां दृष्टिगोचर होती हैं। इस विषय में ध्यातव्य है कि हमारे ऋषि-महर्षियों एवं आचार्यों ने सदैव ही दृक्तुल्य गणित का समर्थन किया है। ऋषि वसिष्ठ का कथन है कि -

**यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।**
**दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम्॥**

इसी प्रकार प्रसिद्ध आर्षग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त कालभेदानुसार गणित में अन्तर को - **युगानां परिवर्तनेन कालभेदोऽत्र केवलः** कहकर दृक्तुल्यता का ही समर्थन करता है। यथा -

**तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।**
**प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्॥**

एवमेव भास्कराचार्य द्वितीय, आचार्य गणेश दैवज्ञ आदि प्रायः सभी सिद्धान्त ज्योतिष के महान आचार्य दृक्तुल्य गणित को ही विवाहादि संस्कारों तथा व्रत-पर्वोत्सवादि कार्यों के लिए आवश्यक मानते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह पञ्चाङ्ग दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकीय ग्रहगणितीय पद्धति पर दिल्ली के अक्षांश एवं रेखांश के अनुसार निर्मित है।

इस पञ्चाङ्ग में तिथि, नक्षत्र, योग और करण के आगे निर्दिष्ट घटी व पल तत्सम्बन्धी तिथ्यादि के सूर्योदय के बाद की स्थिति को बताता है। इसी प्रकार तिथि व नक्षत्र के घटी पल के आगे निर्दिष्ट घण्टा मिनट उसके समाप्ति काल को प्रदर्शित करता है। इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त घण्टा व मिनट मान भारतीय स्टैण्डर्ड समय अर्थात् रेडियो टाइम के अनुसार दिये गये हैं। अतः इस पञ्चाङ्ग के समय को भारत में अपनी घडी के अनुरूप मिलाकर समय का अनुपालन कर सकते हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए मान यथासम्भव विशुद्ध देने के प्रयास किए गए हैं। फिर भी यान्त्रिकीय एवं मानवीय त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं। अतः पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों पर ध्यान न देते हुए पञ्चाङ्ग के उपयोगी तथ्यों को ग्रहण करेंगे। यतः -

**गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।**
**हसन्ति दुर्जनास्तत्र समाददति सज्जनाः॥** - सम्पादक

# विषय सूची


| क्र. | विषय | पृष्ठसंख्या | क्र. | विषय | पृष्ठसंख्या | क्र. | विषय | पृष्ठसंख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | पञ्चाङ्ग परिचय | 01 | 25. | दिल्ली अक्षांश की लग्नसारिणी | 110 | 49. | षोडश कक्ष विचार | 154 |
| 2. | मङ्गलवाक् | 03 | 26. | दशमलग्नसारिणी | 111 | 50. | विंशोत्तरी दशा-अन्तरदशा चक्र | 155 |
| 3. | प्रास्ताविकम् | 03 | 27. | मुहूर्त्त हेतु काल विवरण | 112 | 51. | योगिनी दशा-अन्तरदशा चक्र | 155 |
| 4. | संवत्सरादिफलम् | 04-09 | 28. | विवाह मुहूर्त्त | 113-122 | 52. | ग्रहमैत्री एवं उच्च-नीच विचार | 155 |
| 5. | वार्षिकराशिफल | 09-33 | 29. | गोधूलि प्रशंसा | 122 | 53. | कुण्डलीस्थ ग्रह फल | 156 |
| 6. | नवग्रहस्तोत्रम् | 34 | 30. | वधूप्रवेश मुहूर्त | 123-124 | 54. | गोचर वश ग्रह फल | 157 |
| 7. | महाकुम्भ हरिद्वार 2021 | 34-35 | 31. | द्विरागमन मुहूर्त | 124 | 55. | वर्ष-कुण्डली के ग्रह फल | 157 |
| 8. | सायन सूर्य राशि प्रवेश | 35 | 32. | प्रसूतास्नान मुहूर्त | 124-125 | 56. | शतपद चक्र | 158 |
| 9. | ग्रहों का राशि प्रवेश काल | 36 | 33. | नामकरण मुहूर्त | 125-127 | 57. | मेलापक विचार | 159 |
| 10. | ग्रहों का नक्षत्र प्रवेश काल | 37-38 | 34. | अन्नप्राशन मुहूर्त | 127-128 | 58. | मेलापक सारिणी | 160-163 |
| 11. | व्रत, पर्व एवं उत्सवादि | 39-43 | 35. | चूडाकर्म मुहूर्त | 128 | 59. | वर्षफल निर्माण विधि | 164-168 |
| 12. | सूर्यसङ्क्रान्तिपुण्यकाल | 43 | 36. | कर्णवेध मुहूर्त | 128-129 | 60. | गोदान विधि | 169-175 |
| 13. | ग्रहों का उदयास्त विचार | 44 | 37. | उपनयन मुहूर्त | 129 | 61. | यज्ञोपवीत धारण विधि | 175-176 |
| 14. | ग्रह मार्गी-वक्री विचार | 44 | 38. | अक्षरारम्भ व विद्यारम्भ मुहूर्त | 129-130 | 62. | सन्ध्याविधि | 177-180 |
| 15. | विविध शुभ योग | 45-49 | 39. | विपणि मुहूर्त | 131-133 | 63. | षोडशोपचार पूजन विधि | 181-187 |
| 16. | ग्रहण विवरण | 50 | 40. | सर्वदेवप्रतिष्ठामुहूर्त | 133-134 | 64. | तर्पण प्रयोग | 187-192 |
| 17. | पञ्चाङ्ग-तिथ्यादिविवरण | 51-74 | 41. | हलप्रवहण मुहूर्त | 134-136 | 65. | पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त, रुद्रसूक्त | 193-194 |
| 18. | औदयिक स्पष्टग्रह | 75-86 | 42. | बीजोप्ति मुहूर्त | 136-138 | 66. | सूर्योदय व इष्टकाल साधन | 194-196 |
| 19. | अक्षांश-रेखांश सारिणी | 87-93 | 43. | गृहारम्भ मुहूर्त | 138-140 | 67. | इष्टस्थान का तिथ्यादिमान साधन | 196-197 |
| 20. | ज्योतिषमाहात्म्यम् | 93 | 44. | गृहप्रवेश मुहूर्त | 140-142 | 68. | चौघड़िया मुहुर्त | 198 |
| 21. | क्रान्ति सारिणी | 94 | 45. | विविध मुहूर्तों का विचार | 142-153 | 69. | अग्निवास व शिववास विचार | 198 |
| 22. | चरसारिणी | 95-96 | 46. | खात व काकिणी विचार | 153 | 70. | गण्डमूल नक्षत्र-चरण फल | 198 |
| 23. | वेलान्तर सारिणी | 97 | 47. | विभिन्न शुभाशुभ योग विचार | 154 | 71. | ग्रहदान वस्तुएं व अङ्गस्फुरणफल | 199 |
| 24. | दैनिक लग्नसारिणी | 98-109 | 48. | गण्डमूल बोधक चक्र | 154 | 72. | नवग्रह शान्ति उपाय | 200 |

# वास्तुशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय

## ( केन्द्रीय विश्वविद्यालय ) नई दिल्ली - 110016

1. प्रमाणपत्र ( प्रवेशिका ) : यह षाण्मासिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम स्थापत्य वेद एवं वेदोत्तरवर्ती वास्तुशास्त्र की मूल संकल्पना एवं प्राथमिक जानकारी पर आधारित है।
2. एकवर्षीय डिप्लोमा एवं द्विवर्षीय एडवांस डिप्लोमा : ये दोनों पाठ्यक्रम वास्तुशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्तों का जन-जीवन में प्रयोग एवं उपयोग पर आधारित है। इनमें संस्कृत भाषा का भी प्राथमिक ज्ञान दिया जायेगा।
3. शास्त्री ( बी.ए. ) : यह त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है, जिसमें वास्तुशास्त्र का वैदिक परम्परा पर आधारित वास्तुशास्त्रीय मूलभूत संस्कृत भाषा में निबद्ध मानक ग्रन्थो के द्वारा विस्तृत अध्ययन किया जाता है।
4. आचार्य ( एम.ए. ) : यह द्विवर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम है जिसमें वास्तुशास्त्र के प्रमुख प्राचीन आधारभूत मानक ग्रन्थों का विस्तृत और गम्भीर विषयों का प्रायोगिक अध्ययन किया जाता है।
5. विशिष्टाचार्य ( एम.फिल. ) : यह एकवर्षीय शोधात्मक पाठ्यक्रम है,जिसमें वास्तुशास्त्र के गम्भीर व लोकोपयोगी विषयों पर अनुसन्धान द्वारा नवीन तथ्यों की खेज की जाती है।
6. विद्यावारिधि ( पी-एच.डी. ) : वास्तुशास्त्र के गम्भीर, जटिल एवं लोकोपयोगी विषयों पर अनुसन्धान के माध्यम से नवीन तथ्यों की अन्वेषण एवं लोककल्याण के लिये यह गवेषणात्मक पाठ्यक्रम चलाया जाता है।
7. पी.जी.डिप्लोमा : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ( यू.जी.सी. ) द्वारा मान्यता प्राप्त नवीकरण कार्यक्रम ( इन्नोवेटिव प्रोग्राम ) के तहत 2004 से द्विवर्षीय स्नातकोत्तरवास्तुशास्त्रोपाधि ( पी.जी. डिप्लोमा ) पाठ्यक्रम चल रहा है।

नोट- विश्वविद्यालय द्वारा संचालित उक्त सभी पाठ्यक्रमों की प्रवेश प्रक्रिया जुलाई में विश्वविद्यालय के निर्धारित नियमों के अनुरूप सम्पन्न होती है। वास्तुशास्त्र द्वारा षाण्मासिक प्रमाणपत्रीय, एकवर्षीय एवं द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की कक्षायें शनिवार एवं रविवार को सञ्चालित की जाती हैं। शेष पाठ्यक्रम सोमवार से शुक्रवार को विद्यापीठ के कार्य दिवसों में सम्पन्न किये जाते हैं।

१ माणिक
२ गेहूँ
३ धेनु
४ कुसुंभा
५ सुवर्ण
६ ताम्र
७ रक्त पु.
८ धृत
९ गौ

मध्येवर्तुल म. अ. १२ कलिंगदेश काश्यप गोत्र रक्तवर्ण ५ रा. स्वा. जप ७०००

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

१ वंशपाल
२ तंदुल
३ कपूर
४ मोती
५ श्वेत व.
६ वृषभ
७ रौप्य
८ शंख
९ घृतकुंभ

आग्नेयां चतुरस्रमंडले यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण अंगुल ४ रा. कर्क- स्वामी जप ११०००



ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः

१ प्रवाल
२ गेहूँ
३ मसूर
४ वृषभ
५ ताम्र
६ गुड
७ कर पु.
८ रक्त व.
९ सुवर्ण
रक्त चंदन

दक्षिणेत्रिकोणाकारमंडले अवंतिदेश भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण १८ रा. स्वामी जप १००००

ॐ क्रां क्रीं क्रौंस भौमाय नमः

१ वस्त्र
२ नीलव
३ सुवर्ण
४ कास्य
५ मृग
६ आज्य
७ पंचरत्न
८ दासी
९ हस्ती

ईशान्ये वाणाकारमंडले मगधदेश आत्रेयसगोत्र पीतव. ३६ रा. स्वा. अ. जप ८०००

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

सर्वांग सुन्दर दैनिक लग्न सारणी एवं ग्रह स्पष्ट
युक्त केतकी चित्रापक्षीय ( दृग्गणित )

## श्री संवत् २०७९ का महीधर कीर्तिपञ्चांग

शकः १९४४ सन् २०२२-२०२३

प्रवर्तक पं० महीधर शर्मा धर्माधिकारी उ०धि० पं० रोहणीधर शर्मा
कर्त्ता पं० मेदिनीधर शर्मा, ध०धि० उत्तराधि० पं० पृथ्वीधर शर्मा
जिला टिहरी गढ़वाल ( उत्तराखण्ड )

१ सर्करा
२ हरिद्रा
३ अश्व
४ पीतधा
५ परत व.
६ पुष्पस
७ लवण
८ कांच
९ सुवर्ण

उत्तरे दीर्घचतुरस्त्रमंडले अ. ६ सिंध देश अंगिरस गोत्र पी. वण ६।१२ जप १९०००

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः

१ चित्र व
२ श्वेतधो
३ धेनु
४ हीरा
५ रौप्य
६ सुवर्ण
७ तंदुल
८ भक्ष्यक
९ सुगंधी

पूर्वेपंचकोणमंडलाकारे २७ रा. स्वा. भो. कटदेशभार्गवगोत्रश्वेतवर्ण जप. ११०००

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

१ माष
२ तिल
३ तैल
४ कुलित्थ
५ महिषी
६ लौह
७ दक्षिणा
८ इंद्रनील
९ कृणाव
१० गौ

पश्चिमे धनुषाकार मं. अ. २ सौराष्ट्र देश काश्यपगोत्र कृष्ण व. १०।११ रा.स्वामी जप २३०००
कटदेशभार्गवगोत्रश्वेतवर्ण जप. ११०००



ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः

१ मेढ़ा
२ रत्नगो
३ अश्व
४ नील व
५ कंबल
६ तिल
७ तैल
८ लौह
९ अभ्रक
१० सुता

नैऋत्ये शूर्पाकामंडले अ. १२ राठीन शपठीनसगोत्र धूम्रवर्ण जप १८०००

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

१ वैडूर्य
२ तिल
३ तैल
४ कंबल
५ कस्तूरी
६ शंख
७ कृष्णा
८ माष
९ गोधूम

पवायव्ये ध्वजाकार मंडलेअ० आवंतिदेश जैमिनसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००

ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

माहीधरीदं पञ्चांग देशान्तरे। संस्कृत्यापीष्ट देशीये भविष्यति न संशय॥

वर्ष १३९

## पञ्चांग प्रवर्तक

पं० महीधर शर्मा धर्माधिकारी
१४ फरवरी १८४९ - १५ मई १९१५

**समर्पणम् :** महोत्तरी कीर्ति पञ्चाङ्ग गढ़ाधिपति श्री १०८ सत्कीर्तिशाली महाराज कीर्तिशाह बहादुर के०सी०एस०आई० के जगच्चिरस्मरणीय नाम से श्री सवत् १९४१ से प्रचलित है, तथा साम्प्रत में गढ़ाधिपति स्वस्ति श्री १०८ बदरीश चर्य्यापरायण परम भट्टारक श्री १०८ श्री मन्म महाराजाधिराज नरेन्द्र शाह देव-मानवेन्द्र शाह देव-मनुजयेन्द्र शाह देव की छत्रछाया में प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाता है। अत: स्वर्गीय राजर्षि की जगच्चिरस्मरणीय कीर्ति के उपलक्ष में भिक्षुक की यह तुच्छ भेंट ज्योतिषी वृन्द के लाभार्थ बोलांदा बदरीश के कर कमलों में सादर समर्पित है।


**पञ्चांग एवम् आद्य गणितकर्ता**

**पं० मेदिनीधर शर्मा धर्माधिकारी**

नरेन्द्रनगर, जिला टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

१६ मार्च १९०० - ३१ मार्च १९९९

## विषय सूची


| क्रम | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. | नवग्रह एवं जप संख्या | मुख पृष्ठ |
| २. | सम्पादकीय | १ |
| ३. | कीर्ति पंचाग प्रवर्तक परिचय | २ |
| ४. | राशिफल २०२२-२३ | ३-२६ |
| ५. | संवत्सरादिफलम् शनि का साढेसाती-ढैय्याविचार | २७-३० |
| ६. | मूल पंचाग | ३१-५४ |
| ७. | व्रत एवं पर्व तालिका श्री सम्वत् २०७९ | ५५ |
| ८. | सन् २०२२-२३ के सर्वार्थ सिद्धि योग एवं अन्य मुहुर्त आदि विवाह मुहुर्त सम्वत् २०७९ (२०२२-२३), ग्रहण विवरण | ५६-७२ |
| ९. | विविध विषय सम्पन्न सर्वोपयोगी चक्रम/मूलादि जन्म फलम् | ७३ |
| १०. | तिथिवार नक्षत्र योग चक्र, वर्षफल प्रवेश सारिणी | ७४ |
| ११. | गढ़वाल लग्न सारिणी | ७५ |
| १२. | देश के मुख्य शहरों के अक्षांश-देशान्तर सारिणी | ७६ |
| १३. | उत्तराखण्ड के अक्षांश-देशान्तर सारिणी | ७७ |
| १४. | सप्तवर्ग चक्रम् | ७८ |
| १५. | त्रिवर्ग चक्रम् | ७९ |
| १६. | वर-कन्या गुण मेलाप सारिणी, छोडा चक्रम सारिणी | ८०-८१ |
| १७. | क्रान्ति सारिणी एवं धरसारिणी | ८२-८३ |
| १८. | बेलान्तर सारिणी, तजिके हड्डा चक्रम वास्तु प्रकरण | ८४-८५ |
| १९. | संस्कार प्रकरणम्, यात्रा मुहुर्त | ८६-८९ |
| २०. | अथ बृहद्गोदानविधि, षोडशोपचार पूजन विधि, यज्ञोपवीत धारण प्रयोग, अथ जन्मदिन पूजनम् | ९०-९६ |
| २१. | पितृ ऋण से मुक्ति का मार्ग | कवर |


## श्री महीधर कीर्ति पंचांग की विशेषतायें

यह ख्याति प्राप्त पचांग विगत १३६ वर्षों से निरन्तर प्रकाशित हो रहा है और समाज के सभी वर्गों को तदसम्बन्धित वाछित जानकारी देता रहा है। जिन माननीय ज्योतिषियों, पुरोहितों, पण्डितों और उनके यजमानों ने इसे अपनाकर मार्ग दर्शन का माध्यम बनाया उसके लिये पचाग परिवार उनका ऋणी है। इस वर्ष सवत २०७९ का यह १३६ वाँ प्रकाशन एक नवीन कलेवर और विशेषताओं के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. प्रत्येक दिवस की लग्न सारिणी उसी पक्ष-विवरण के साथ तिथिवार घण्टा-मिनट सहित अंकित की गई है। आशा है यह ज्योतिष प्रेमियों के लिये बहुत अच्छा प्रयोग प्रमाणित होगा।

२. प्रत्येक दिवस को तिथि, नक्षत्र, योग, करण आदि को घटी-पल तथा घण्टा-मिनट में दिखाया गया है।

३. चन्द्रमा का किस राशि में कब प्रवेश होगा, यह भी घटी-पल तथा घण्टा-मिनट में प्रदर्शित किया गया है।

४. देश/प्रदेश के प्रमुख त्यौहारों व पर्वों के नाम उसी तिथि के आगे दिखाये गये हैं। कहीं स्थानाभाव के कारण A,B,C .... ताराकित कर नीचे अंकित किये गये हैं।

५. नवरात्र आदि प्रमुख पर्वों की घटस्थापना का समय घण्टा-मिनट में दिखाया गया है।

६. प्रत्यक सक्रान्ति का वास्तविक नाम तथा उसके प्रारम्भ तथा समाप्ति का समय भी घण्टा-मिनट में स्पष्ट किया गया है।

७. पचाग के प्रकाशन मे सस्कृत के सरल शब्दों/व्याकरण का प्रयोग हुआ है ताकि इसके उपयोगकर्ताओं को कठिनाई न हो।

८. ग्रहों की स्थिति स्पष्ट करने हेतु भी घण्टा-मिनट मे इगित किया गया है।

९. पचाग में विभिन्न पर्वों और व्रतों की तालिका अलग से दी गई है।

१०. पचाग में पूरे वर्ष के मुहूर्तों की तिथियाँ अकित की गई हैं।

११. ग्रहणों का आरम्भ व समाप्ति काल भी घण्टा-मिनट मे दिया गया है।

१२. इस पचाग के अध्ययन से लगता है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसका उपयोग कर सकता है। श्री महीधर कीर्ति पचाग के सृजनकर्ताओं का उद्देश्य इसे जन-साधारण के लिये उपयोगी बनाना था।

१३. पचाग के उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिये कुछ विधियों/प्रक्रियाओं का भी इसमे समावेश किया गया है।

आशा है श्रीमहीधर कीर्ति पचाग अधिक उपयोगी प्रमाणित होगा। शुभम्।

**शुभकामनाओं सहित।**


**महीधर कीर्ति पञ्चांग**

**सम्पादकीय संरक्षक एवं प्रकाशक**

**पयोधर डंगवाल**

महीधर कीर्ति पञ्चाग कार्यालय

**"मेदिनीष"**

पो. ओ. नरेंद्रनगर, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड,

फोन 9812302564

**गणित कर्ता एवं सम्पादक**

**प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (अवैतनिक)**

कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय

हरिद्वार-249402

**सह सम्पादक**

**डॉ. अशोक थपलियाल (अवैतनिक)**

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ

नई दिल्ली -110016

**शंका समाधान कर्ता**

**डॉ. पण्डित धर्मानन्द मैठाणी, ज्योतिषाचार्य**

फोन 09012968024

**एवं**

**पण्डित रमा नन्द डबराल**

आचार्य फलित ज्योतिष

फोन 08057080380

**महीधर कीर्ति पञ्चांग के सम्पादन और प्रकाशन में डॉ. देशबन्धु शर्मा एवं डॉ. प्रवेश व्यास (श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली) द्वारा दी गई अवैतनिक सेवा के लिये हम उनके आभारी हैं।**

## वार्षिक राशिफल २०२२-२३

### मेष राशि ( चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ )

**अप्रैल** – इस माह आप अपने अंदर आत्म-विश्वास की अनुभूति महसूस करेंगे और खुद को साहसी भी पाएंगे। अपनी मेहनत व सकारात्मक व्यवहार के ज़रिए आप सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे और यदि आपको पदोन्नति या वेतन बढ़ने की उम्मीद है तो आपकी इच्छा इस अवधि के दौरान पूरी हो सकती है। इन कुछ अच्छे परिणामों के साथ-साथ आप कुछ बुरे लोगों से भी मिल सकते हैं। मां के लिए ये समय थोड़ा कष्टदायी हो सकता है। इस दौरान उन्हें दु:ख का अनुभव हो सकता है या वे किसी बड़ी समस्या में भी पड़ सकती हैं। इसके अलावा घर में आपकी व्यंग्यपूर्ण भाषाशैली और कठोर व्यवहार गलतफ़हमी और असंतोष उत्पन्न कर सकता है। इसके अतिरिक्त इस बीच ख़र्चे बढ़ जाएंगे क्योंकि आप घर की आवश्यकताओं के कुछ सामान ख़रीदेंगे। बच्चों से संबंधित जो भी परेशानियां आपको हैं, वो सभी दूर हो जाएंगी। शिक्षा के क्षेत्र में उनका प्रदर्शन संतोषजनक रहेगा। वाहन चलाते समय आपको सावधानी रखने की आवश्यकता है क्योंकि चोट लगने की संभावना दिखाई दे रही हैं। इस मास १०, ११, १६, २०, २७, २८, २६ दिनांक नेष्ट रहेगी।

**मई** – व्यापार क्षेत्र से जुड़े जातकों के लिए यह माह बहुत अच्छा रहने वाला है। व्यापार को बढ़ाने का विचार अच्छे परिणाम देगा और आपका व्यापार नई ऊंचाइयों पर पहुंच जाएगा। जिन जातकों ने बैंक में लोन के लिए अर्ज़ी लगा रखी है तो इस दौरान उसे स्वीकृति प्राप्त हो सकती है। कार्यस्थल में आपके द्वारा किए गए प्रयासों और संसाधनों में वृद्धि के संकेत दिखाई दे रहे हैं। इस दौरान आपके आपके बच्चों के साथ कुछ विवाद हो सकते हैं। इस महीने के शुरू होते ही आपके स्वभाव में अहंकार आ सकता है जिस पर नियन्त्रण रखने की आवश्यकता है। अपने बच्चों को इतना भी लाड़-प्यार न करें कि वो इसका फायदा उठाने लगें। अपनी संवादशैली, बुद्धि आदि के लिए आपको दोस्तों, सहभागियों व पड़ोसियों से इस दौरान प्रशंसा प्राप्त हो सकती है। इसी माह आप अपने अंदर गुस्से का भाव महसूस करने लग जाएंगे। इस दौरान अपने ऊपर काबू पाएं और गुस्से से बचें, अन्यथा समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। इस बीच आपके ख़र्चे बढ़ेंगे। इस मास ७, ८, ६, १६, १७, २४, २५, २६ दिनांक नेष्ट रहेगी।

**जून** – इस महीने के प्रारम्भ में परिवार के कुछ सदस्यों का स्वास्थ्य ख़राब रहने से आप परेशान हो सकते हैं। डॉक्टर, दवाई आदि पर ख़र्चे ज़रूरत से ज्यादा हो सकते हैं। लेकिन ये अवधि बस थोड़े ही समय के लिए है अत: चिन्ता न करें। चीज़ें बहुत जल्दी संपल जाएंगी और आपकी सभी शीघ्र समाप्त हो जाएंगी। आय के नए स्रोत प्राप्त होंगे और बचत भी ज्यादा होगी। आप अपने भीतर सकारात्मकता व मानसिक शांति का अनुभव करेंगे। आपका मन अति सक्रिय हो जाएगा और आपका काम अच्छा होगा। लोग आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होंगे और इस दौरान आप प्रेम संबंधों में भी अपनी रुचि दिखाएंगे। जीवन साथी का सहयोग प्राप्त होगा। ज़मीन-जायदाद खरीदने से पहले सभी बातें अच्छे से साफकर लें। यदि निवेश का प्लान बना रहे हैं तो समय बिल्कुल अनुकूल है। बीते समय में किए गए सभी निवेश इस दौरान लाभदायक फल देंगे। इस मास ३, ४, ५, १२, १३, १४, २१, २२, ३० दिनांक नेष्ट रहेगी।

**जुलाई** – व्यापार क्षेत्र से जुड़े जातक इस माह अच्छा लाभ कमाएंगे। इस मास आपको किसी विदेशी कंपनी से भी सहयोग प्राप्त हो सकता है। लेकिन साझेदार के साथ काम करते वक्त आपको सतर्क रहने की आवश्यकता है। अपने फैसलों व वित्तीय मामलों को पूरी तरह से सुलझाए रखें अन्यथा कोई समस्या हो सकती है। नौकरी करते हैं और अगर कुछ बदलाव करने की योजना बना रहे हैं तो यह समय इसके लिए ठीक नहीं है, थोड़ा और इंतजार करें। अगर आप नौकरी छोड़ भी देंगे तब भी वक्त वैसा ही रहेगा। तो बेहतर यही है कि अभी जिस नौकरी में हैं, उसी पर ध्यान केंद्रित करें। निजी जीवन में परेशानियां आ सकती हैं लेकिन शांति व खुशी फिर भी बनी रहेगी। इस माह आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और आपको पैसों से संबंधित कोई परेशानी नहीं होगी। आपकी अपनी व पारिवारिक आय में बढ़ोत्तरी होगी। दूसरों के ऊपर हावी होने का आपका स्वभाव परेशानियों को उत्पन्न कर सकता है। इन्हें दूर करने के लिए संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। इस मास १, २, १०, ११, १८, १६, २८, २६ दिनांक नेष्ट रहेगी।

**अगस्त** – आर्थिक रूप से समय अच्छा रहेगा। बड़े भाई-बहन जो विदेश में अथवा अन्यत्र कहीं दूर कार्यरत हैं, उनकी सहायता से पैसों का आगमन होगा जिससे आर्थिक स्थिति सुधरेगी। सामाजिक स्थिति में भी पहले से बढ़ोत्तरी होगी और लोग आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होंगे। आप जीवन साथी के साथ कोई नया व्यापार प्रारम्भ कर सकते हैं जो आपके लिए बहुत लाभदायक होगा। खुश रहें और नकारात्मक ऊर्जा व विचारों को अपने भीतर न आने दें। अपने ऊपर ध्यान दें और खुद को जीवन में आगे ले जाने के रास्ते निकालें। नव विवाहित जोड़ों के लिए ये माह चुनौतीपूर्ण रहेगा। लड़ाई, झगड़े व विवाद इस दौरान आपके जीवन में रहेंगे जिससे मानसिक शांति भी भंग होगी। यदि आप स्थिति को सुधारना चाहते हैं तो ध्यान व समझदारी के साथ काम लें। माह के लगभग पंद्रह दिन बाद चीज़ें सुधरने लग जाएंगी और भाग्य आपका साथ देगा। इस मास ६, ७, ८, १४, १५, १६, २४, २५, २६ दिनांक नेष्ट रहेगी।

**सितम्बर** – विदेश में काम करने वाले जातकों को सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि ऐसी संभावनाएं हैं कि आप पर कोई बड़ा जैसे कागज़ात या पैसों की चोरी का आरोप लग सकता है। कार्यस्थल पर उच्च अधिकारियों से भी विवाद हो सकता है। माह की शुरुआत में आप लक्ष्यहीन होकर कार्य करेंगे लेकिन आधा माह बीत जाने पर आप अपनी एक नई शुरुआत करेंगे। ये समय आपके परिवार वालों के लिए काफी चुनौतीपूर्ण रहेगा। माता-पिता के लिए समय उचित नहीं है। उन्हें किसी भी प्रकार की मानसिक अशांति या स्वास्थ्य संबंधी समस्या से गुज़रना पड़ सकता है, इसलिए उन पर इस दौरान ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। पारिवारिक जीवन इस दौरान थोड़ा अस्त-व्यस्त रह सकता है। आपके परिवार वालों को आपसे कुछ समस्या हो सकती हैं और वो आपसे नाखुश हो सकते हैं। परिवार की ये समस्याएं कार्यक्षेत्र में भी देखने को मिल सकती हैं। इन सभी समस्याओं को जल्द से जल्द हल करें और परिवारिक व व्यावसायिक जीवन में संतुलन बनाएं। इस मास ३, ४, ११, १२, १६, २, २१, २२, ३ दिनांक नेष्ट रहेगी।

ISSN– 2395-1699

निरयणं दृक्तुल्यञ्च केतकीपक्षसम्मतम्। नैसर्गिकं हि पञ्चाङ्गं भारते भासतां सदा॥

भारतीय शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य निरयण चित्रापक्षीय

# नैसर्गिक-पञ्चाङ्गं

राजा-शनि

विक्रमसंवत् - २०७९

कलिसंवत् - ५१२३

मन्त्री-गुरु

शकसंवत् - १९४४

ईसवीय - २०२२-२०२३

संरक्षक एवं प्रधानसम्पादक - प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय

सम्पादक - प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

सह सम्पादक - डॉ. अशोक थपलियाल

प्रकाशक - नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, नई दिल्ली

संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक
**प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय**
अध्यक्षचर ज्योतिष विभाग, सङ्काय प्रमुख-सं.वि.ध.वि.सङ्काय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

सम्पादक एवं गणितकर्ता (अवैतनिक)
**प्रो० देवीप्रसाद त्रिपाठी**
कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय
हरिद्वार, उत्तराखण्ड
© सम्पादक

उपहार

प्रबन्ध सम्पादक (अवैतनिक)
**प्रो० मीनाक्षी मिश्र**
आचार्या शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

सह सम्पादक (अवैतनिक)
**डॉ० अशोक थपलियाल**
सहाचार्य एवं अध्यक्ष, वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

सम्पादन सहायक (अवैतनिक)
**डॉ० देशबन्धु, डॉ० प्रवेश व्यास,**
**डॉ० योगेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ० दीपक वशिष्ठ,**
**डॉ. नवीन पाण्डेय, डॉ. मृत्युञ्जय त्रिपाठी, श्री भगवतीप्रसाद त्रिपाठी**

प्रकाशक नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, RZG-271, पालम कालोनी, नई दिल्ली
मुख्य कार्यालय - 38 मानस नगर कालोनी, वाराणसी-5

प्रकाशन वर्ष - 2022 ई., पुष्प -अष्टम मूल्य - रु. 80/-

## पञ्चाङ्ग परिचय

### अक्षांश 28°39° N, रेखांश 77°12°E, पलभा 06°33°

भारतवर्ष में सम्प्रति विभिन्न पद्धतियों से पञ्चाङ्ग निर्माण होता है। इनमें तिथ्यादि के मानों में विसंगति के कारण व्रत पर्वोत्सव में भी विसंगतियां दृष्टिगोचर होती हैं। इस विषय में ध्यातव्य है कि हमारे ऋषि-महर्षियों एवं आचार्यों ने सदैव ही दृक्तुल्य गणित का समर्थन किया है। ऋषि वसिष्ठ का कथन है कि -

**यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।**
**दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम्॥**

इसी प्रकार प्रसिद्ध आर्षग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त कालभेदानुसार गणित में अन्तर को - **युगानां परिवर्तेन कालभेदोऽत्र केवलः** कहकर दृक्तुल्यता का ही समर्थन करता है। यथा -

**तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।**
**प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्॥**

एवमेव भास्कराचार्य द्वितीय, आचार्य गणेश दैवज्ञ आदि प्रायः सभी सिद्धान्त ज्योतिष के महान आचार्य दृक्तुल्य गणित को ही विवाहादि संस्कारों तथा व्रत-पर्वोत्सवादि कार्यों के लिए आवश्यक मानते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह पञ्चाङ्ग दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकीय ग्रहगणितीय पद्धति पर दिल्ली के अक्षांश एवं रेखांश के अनुसार निर्मित है।

इस पञ्चाङ्ग में तिथि, नक्षत्र, योग और करण के आगे निर्दिष्ट घटी व पल तत्सम्बन्धी तिथ्यादि के सूर्योदय के बाद की स्थिति को बताता है। इसी प्रकार तिथि व नक्षत्र के घटी पल के आगे निर्दिष्ट घण्टा मिनट उसके समाप्ति काल को प्रदर्शित करता है। इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त घण्टा व मिनट मान भारतीय स्टैण्डर्ड समय अर्थात् रेडियो टाइम के अनुसार दिये गये हैं। अतः इस पञ्चाङ्ग के समय को भारत में अपनी घडी के अनुरूप मिलाकर समय का अनुपालन कर सकते हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए मान यथासम्भव विशुद्ध देने के प्रयास किए गए हैं। फिर भी यान्त्रिकीय एवं मानवीय त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं। अतः पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों पर ध्यान न देते हुए पञ्चाङ्ग के उपयोगी तथ्यों को ग्रहण करेंगे। यतः -

**गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।**
**हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥**

– सम्पादक

# विषय सूची


| क्र. | विषय | पृष्ठसंख्या | क्र. | विषय | पृष्ठसंख्या | क्र. | विषय | पृष्ठसंख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | पञ्चाङ्ग परिचय | 01 | 25. | दिल्ली अक्षांश की लग्नसारिणी | 110 | 49. | षोडश कक्ष विचार | 146 |
| 2. | मङ्गलवाक् | 03 | 26. | दशमलग्नसारिणी | 111 | 50. | विंशोत्तरी दशा-अन्तरदशा चक्र | 147 |
| 3. | प्रास्ताविकम् | 03 | 27. | मुहूर्त्त हेतु काल विवरण | 112 | 51. | योगिनी दशा-अन्तरदशा चक्र | 147 |
| 4. | संवत्सरादिफलम् | 04-10 | 28. | विवाह मुहूर्त्त | 113-120 | 52. | ग्रहमैत्री एवं उच्च-नीच विचार | 147 |
| 5. | वार्षिकराशिफल | 10-34 | 29. | गोधूलि प्रशंसा | 121 | 53. | कुण्डलीस्थ ग्रह फल | 148 |
| 6. | ग्रहों का उदयास्त विचार | 34 | 30. | वधूप्रवेश मुहूर्त | 121-122 | 54. | गोचर वश ग्रह फल | 149 |
| 7. | ग्रहों का राशि प्रवेश काल | 35 | 31. | द्विरागमन मुहूर्त | 122 | 55. | वर्ष-कुण्डली के ग्रह फल | 149 |
| 8. | सायन सूर्य राशि प्रवेश | 35 | 32. | प्रसूतास्नान मुहूर्त | 122-123 | 56. | शतपद चक्र | 150 |
| 9. | ग्रहों का नक्षत्र प्रवेश काल | 36-37 | 33. | नामकरण मुहूर्त | 123 | 57. | मेलापक विचार | 151 |
| 10. | ग्रह मार्गी-वक्री विचार | 37 | 34. | अन्नप्राशन मुहूर्त | 124 | 58. | मेलापक सारिणी | 152-155 |
| 11. | व्रत, पर्व एवं उत्सवादि | 38-44 | 35. | कर्णवेध मुहूर्त | 124-125 | 59. | वर्षफल निर्माण विधि | 156-160 |
| 12. | सूर्यसङ्क्रान्तिपुण्यकाल | 44 | 36. | चूडाकर्म मुहूर्त | 125 | 60. | गोदान विधि | 161-166 |
| 13. | विविध शुभ योग | 45-47 | 37. | अक्षरारम्भ व विद्यारम्भ मुहूर्त | 125-126 | 61. | यज्ञोपवीत धारण विधि | 166-167 |
| 14. | ग्रहण विवरण (2022-23) | 48-49 | 38. | उपनयन मुहूर्त | 126 | 62. | सन्ध्याविधि | 168-172 |
| 15. | नवग्रहस्तोत्रम् | 50 | 39. | विपणि मुहूत | 127-128 | 63. | षोडशोपचार पूजन विधि | 173-179 |
| 16. | प्रात: स्मरणीय श्लोक | 50 | 40. | सर्वदेवप्रतिष्ठामुहूर्त | 128 | 64. | तर्पण प्रयोग | 179-184 |
| 17. | पञ्चाङ्ग-तिथ्यादिविवरण | 51-74 | 41. | हलप्रवहण मुहूर्त | 128-130 | 65. | पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त, रुद्रसूक्त | 185-186 |
| 18. | औदयिक स्पष्टग्रह | 75-86 | 42. | बीजोप्ति मुहूर्त | 130-132 | 66. | सूर्योदय व इष्टकाल साधन | 186-188 |
| 19. | अक्षांश-रेखांश सारिणी | 87-93 | 43. | गृहारम्भ मुहूर्त | 132-133 | 67. | इष्टस्थान का तिथ्यादिमान साधन | 188-190 |
| 20. | ज्योतिषमाहात्म्यम् | 93 | 44. | गृहप्रवेश मुहूर्त्त | 133-134 | 68. | चौघड़िया मुहुर्त | 190 |
| 21. | क्रान्ति सारिणी | 94 | 45. | विविध मुहूर्तों का विचार | 134-145 | 69. | अग्निवास व शिववास विचार | 190 |
| 22. | चरसारिणी | 95-96 | 46. | खात व काकिणी विचार | 145 | 70. | गण्डमूल नक्षत्र-चरण फल | 190 |
| 23. | वेलान्तर सारिणी | 97 | 47. | विभिन्न शुभाशुभ योग विचार | 146 | 71. | ग्रहदान वस्तुएं व अङ्गस्फुरणफल | 191 |
| 24. | दैनिक लग्नसारिणी | 98-109 | 48. | गण्डमूल बोधक चक्र | 146 | 72. | नवग्रह शान्ति उपाय | 192 |

## मङ्गलवाक्

सर्वविद्या की राजधानी के अधिष्ठाता एवं सभी विद्याओं के गुरु बाबा विश्वनाथ के अनुग्रह से नैसर्गिक शोध संस्था विगत छह वर्षों से नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग का प्रकाशन करती आ रही है। इस वर्ष संस्था विक्रम संवत् 2078 के पञ्चाङ्ग का प्रकाशन वास्तुशास्त्र विभाग, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) नई दिल्ली के साथ संयुक्त तत्त्वावधान में कर रही है। इस महनीय अवसर पर मैं संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

भारतीय पद्धति से दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का निर्माण एवं प्रकाशन नैसर्गिक शोधसंस्था का मुख्य उद्देश्य रहा है। भारतीय दैवज्ञों के सिद्धान्तों का सदैव मैं आदर करता रहा हूँ। इसीलिए आचार्यों के निर्देशानुसार सूर्यसिद्धान्त में अपेक्षित परिष्कारों के साथ उसी सिद्धान्त के अनुसरण का पक्षपाती रहा हूँ। आचार्यों के वचन हमें नित्य नये परिष्कारों के लिए प्रेरित करते हैं-

सौरोऽर्कोऽपि विधूच्चमङ्कलिको नाक्षत्रमस्तवार्यज-<br>
स्तेभ्यः स्याद्ग्रहणादिदृग्सममियं प्रोक्ता मया सा तिथिः।<br>
ग्राह्या मङ्गलधर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समाऽ-<br>
पेक्षा यदि चालितोपकरणैस्तत्पक्षजा स्यात्तिथिः॥-तिथिचिन्तामणि।8

मुझे प्रसन्नता है कि सूर्यसिद्धान्त के परिष्कार सम्बन्धी अनुसन्धान में कई युवा विद्वान कार्यरत हैं। इसी बीच भारतीय शुद्ध पञ्चाङ्गों की आवश्यकता को देखते हुए आचार्य गणेशदैवज्ञ एवं आचार्य केतकर के मार्गों का अनुसरण करते हुए दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का प्रयास किया गया। केतकीय ग्रहगणित सिद्धान्त पर आधारित नैसर्गिक पञ्चाङ्ग शास्त्रसम्मत एवं दृक्तुल्य है। संस्था किसी भी आर्थिक लाभ की दृष्टि से नहीं अपितु भारतीय विद्याओं के प्रसार एवं संवर्धन हेतु कार्य करती है। इस महनीय कार्य में प्रयास करने के बाद भी कुछ त्रुटियां सम्भव हैं। अतः प्रबुद्ध पाठकगण उनका मार्जन करते हुए अवगत कराने का कष्ट करेंगे ताकि अग्रिम अङ्कों में उनका समुचित समाधान किया जा सके। सहयोग हेतु संस्था सदैव आभारी रहेगी।

मैं इस श्रमसाध्य कार्य के लिए प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी को साधुवाद देता हूँ जिन्होंने संस्था के लिए निःस्वार्थभाव से अपने व्यस्त क्षणों से समय निकाल कर इस कार्य को पूर्णता तक पहुंचाया। वास्तुशास्त्रविभाग के प्राध्यापकगण के साथ ही संस्था के सभी सदस्यों एवं सहयोगियों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। अन्त में संस्था की ओर से आगामी भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें। नववर्ष देश एवं देशवासियों के लिए सभी प्रकार से सुख एवं सम्मान में वृद्धिकारक हो। शुभमिति।

गीता जयन्ती, सं २०७८ — प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय<br>
नैसर्गिक शोध संस्था, वाराणसी — संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक

## प्रास्ताविकम्

अथर्ववेद का उपवेद स्थापत्यवेद भवनादि निर्माण कला की अत्यन्त सुप्रसिद्ध प्राचीन विद्या है, जो भारतीय वास्तुशास्त्र नाम से जानी जाती है। यह उत्तरवर्ती काल में वास्तुविद्या के नाम से सुविख्यात हुई। इस विद्या का उल्लेख वराहमिहिराचार्य ने बृहत्संहिता में किया है। महाराज भोजदेव ने वास्तुशास्त्र के अङ्ग के रूप में ज्योतिष को स्वीकार किया है-

सामुद्रं गणितञ्चैव ज्योतिषं छन्द एव च।<br>
सिराज्ञानं तथा शिल्पं यन्त्रकर्मविधिस्तथा॥<br>
एतान्यङ्गानि जानीयाद्वास्तुशास्त्रस्य बुद्धिमान्।- सं.सू. 44/3-4

वस्तुतः वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष अङ्ग-अङ्गी के रूप में परस्पर सम्बन्धित तथा एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। अतः वास्तुशास्त्र के अध्येताओं के लिए भी ज्योतिष का अध्ययन आवश्यक है। इसी कारण वास्तुशास्त्र विभाग ने अपने पाठ्यक्रम में ज्योतिष के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को स्थान दिया है। वास्तुशास्त्र में ज्योतिष के मानविधान, मुहूर्त आदि अनेक भागों का उपयोग होता है।

ज्योतिषशास्त्र का मुख्य लक्ष्य घटनाओं का पूर्वानुमान करना है, जो ग्रहों की गति एवं स्थिति के सम्यक् ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है -

ज्योतिःशास्त्रफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते।<br>
नूनं लग्नबलाश्रितः पुनरयं तत्स्पष्टखेटाश्रयम्॥-सि.शि.गो.प्र.6

इसी ग्रहगणना के सदुद्देश्य से प्राचीन काल से ही पञ्चाङ्ग निर्माण करना ज्योतिर्विदों का प्रमुख कार्य रहा है। सम्प्रति भारतवर्ष में अनेक पद्धतियों के आधार पर पञ्चाङ्ग प्रचलित हैं, परन्तु इन पञ्चाङ्गों के तिथ्यादि मानों में विविधता के कारण व्रत, पर्वोत्सवों में भिन्नता परिलक्षित होती है। हमारे मनीषियों ने सदैव दृक्तुल्यता को व्रतपर्वोत्सवों के आचरण में प्रमाण माना है। आचार्य भास्कर कहते हैं -

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।<br>
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या॥सि.शि.स्प.।

इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकी ग्रहगणितीय पद्धति के आधार पर नैसर्गिक शोध संस्था द्वारा प्रख्यात ज्योतिर्विद प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय जी के मार्गनिर्देशन में नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग प्रकाशित किया जाता रहा है। इस पञ्चाङ्ग के प्रकाशन से न केवल वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, वेद एवं पौरोहित्य के छात्र,अध्यापक एवं जिज्ञासुजन अपितु भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले सामान्य लोग भी लाभान्वित होंगे। अतः मैं इस महनीय कार्य से जुड़े सभी विद्वानों को साधुवाद देते हुए सुधीजनों के करकमलों में यह ज्ञानपुष्प समर्पित कर अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। शमिति।

मकरसङ्क्रान्ति, सं.२०७८ — प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी<br>
उ.सं.वि.वि., हरिद्वार — सम्पादक

ISSN– 2395-1699

निरयणं दृक्तुल्यञ्च केतकीपक्षसम्मतम्। नैसर्गिकं हि पञ्चाङ्गं भारते भासतां सदा॥

भारतीय शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य निरयण चित्रापक्षीय

# नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग

नलनामसंवत्सर

राजा-बुध

विक्रम संवत् - २०८०

कलि संवत् - ५१२४

मन्त्री-शुक्र

शक संवत् - १९४५

ईसवीय - २०२३-२०२४

संरक्षक एवं प्रधानसम्पादक - प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय

सम्पादक - प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

सह सम्पादक - डॉ. अशोक थपलियाल

प्रकाशक - नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, नई दिल्ली

संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक
प्रो0 रामचन्द्र पाण्डेय
अध्यक्षचर ज्योतिष विभाग, सङ्काय प्रमुख-सं.वि.ध.वि.सङ्काय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

सम्पादक एवं गणितकर्त्ता (अवैतनिक)
प्रो0 देवीप्रसाद त्रिपाठी
विभागाध्यक्ष (वास्तुशास्त्र)
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि. (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली-110016
© सम्पादक

प्रबन्ध सम्पादक (अवैतनिक)
प्रो0 मीनाक्षी मिश्र
आचार्या शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

सह सम्पादक (अवैतनिक)
डॉ0 अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष, वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

सम्पादन सहायक (अवैतनिक)
डॉ0 देशबन्धु, डॉ0 प्रवेश व्यास,
डॉ0 योगेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ0 दीपक वशिष्ठ,
डॉ. नवीन पाण्डेय, डॉ. मृत्युञ्जय त्रिपाठी, डॉ0 अव्यक्त रैणा

प्रकाशक नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, RZG-271, पालम कालोनी, नई दिल्ली
मुख्य कार्यालय - 38 मानस नगर कालोनी, वाराणसी-5

प्रकाशन वर्ष - 2023 ई., पुष्प -नवम मूल्य - रु. 80/-

## पञ्चाङ्ग परिचय

**अक्षांश 28°39° N, रेखांश 77°12°E, पलभा 06°33°**

भारतवर्ष में सम्प्रति विभिन्न पद्धतियों से पञ्चाङ्ग निर्माण होता है। इनमें तिथ्यादि के मानों में विसंगति के कारण व्रत पर्वोत्सव में भी विसंगतियां दृष्टिगोचर होती हैं। इस विषय में ध्यातव्य है कि हमारे ऋषि-महर्षियों एवं आचार्यों ने सदैव ही दृक्तुल्य गणित का समर्थन किया है। ऋषि वसिष्ठ का कथन है कि -

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम्।।

इसी प्रकार प्रसिद्ध आर्षग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त कालभेदानुसार गणित में अन्तर को - युगानां परिवर्तनेन कालभेदोऽत्र केवलः कहकर दृक्तुल्यता का ही समर्थन करता है। यथा -

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।
प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्।।

एवमेव भास्कराचार्य द्वितीय, आचार्य गणेश दैवज्ञ आदि प्रायः सभी सिद्धान्त ज्योतिष के महान आचार्य दृक्तुल्य गणित को ही विवाहादि संस्कारों तथा व्रत-पर्वोत्सवादि कार्यों के लिए आवश्यक मानते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह पञ्चाङ्ग दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकीय ग्रहगणितीय पद्धति पर दिल्ली के अक्षांश एवं रेखांश के अनुसार निर्मित है।

इस पञ्चाङ्ग में तिथि, नक्षत्र, योग और करण के आगे निर्दिष्ट घटी व पल तत्सम्बन्धी तिथ्यादि के सूर्योदय के बाद की स्थिति को बताता है। इसी प्रकार तिथि व नक्षत्र के घटी पल के आगे निर्दिष्ट घण्टा मिनट उसके समाप्ति काल को प्रदर्शित करता है। इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त घण्टा व मिनट मान भारतीय स्टैण्डर्ड समय अर्थात् रेडियो टाइम के अनुसार दिये गये हैं। अतः इस पञ्चाङ्ग के समय को भारत में अपनी घडी के अनुरूप मिलाकर समय का अनुपालन कर सकते हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए मान यथासम्भव विशुद्ध देने के प्रयास किए गए हैं। फिर भी यान्त्रिकीय एवं मानवीय त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं। अतः पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों पर ध्यान न देते हुए पञ्चाङ्ग के उपयोगी तथ्यों को ग्रहण करेंगे। यतः -

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः।।

- सम्पादक

उपहार

# विषय सूची


| क्र. | विषय | पृष्ठसंख्या |
|---|---|---|
| 1. | पञ्चाङ्ग परिचय | 01 |
| 2. | मङ्गलवाक् | 03 |
| 3. | प्रास्ताविकम् | 03 |
| 4. | संवत्सरादिफलम् | 04-08 |
| 5. | वार्षिकराशिफल | 08-32 |
| 6. | ग्रहों का उदयास्त विचार | 32 |
| 7. | ग्रहों का राशि प्रवेश काल | 33 |
| 8. | सायन सूर्य राशि प्रवेश | 33 |
| 9. | ग्रहों का नक्षत्र प्रवेश काल | 34-35 |
| 10. | ग्रह मार्गी-वक्री विचार | 35 |
| 11. | व्रत, पर्व एवं उत्सवादि | 36-40 |
| 12. | विविध शुभ योग | 41-42 |
| 13. | पञ्चाङ्ग-तिथ्यादिविवरण | 43-68 |
| 14. | ग्रहण विवरण (2023-24) | 69 |
| 15. | नवग्रहस्तोत्रम् | 70 |
| 16. | औदयिक स्पष्टग्रह | 70-83 |
| 17. | प्रातः स्मरणीय श्लोक | 83 |
| 18. | अक्षांश-रेखांश सारिणी | 84-90 |
| 19. | ज्योतिषमाहात्म्यम् | 90 |
| 20. | क्रान्ति सारिणी | 91 |
| 21. | चरसारिणी | 92-93 |
| 22. | वेलान्तर सारिणी | 94 |
| 23. | दैनिक लग्नसारिणी | 95-106 |
| 24. | दिल्ली अक्षांश की लग्नसारिणी | 107 |
| 25. | दशमलग्नसारिणी | 108 |
| 26. | मुहूर्त्त हेतु काल विवरण | 109 |
| 27. | विवाह मुहूर्त्त | 110-113 |
| 28. | गोधूलि प्रशंसा | 114 |
| 29. | वधूप्रवेश मुहूर्त | 114-115 |
| 30. | द्विरागमन मुहूर्त | 115-116 |
| 31. | प्रसूतास्नान मुहूर्त | 117 |
| 32. | नामकरण मुहूर्त | 117-118 |
| 33. | अन्नप्राशन मुहूर्त | 118-119 |
| 34. | कर्णवेध मुहूर्त | 119 |
| 35. | चूडाकर्म मुहूर्त | 119-120 |
| 36. | अक्षरारम्भ व विद्यारम्भ मुहूर्त | 120 |
| 37. | उपनयन मुहूर्त | 120-121 |
| 38. | विपणि मुहूत | 121-122 |
| 39. | सर्वदेवप्रतिष्ठामुहूर्त | 122-123 |
| 40. | हलप्रवहण मुहूर्त | 123 |
| 41. | बीजोप्ति मुहूर्त | 123-124 |
| 42. | गृहारम्भ मुहूर्त | 124-125 |
| 43. | गृहप्रवेश मुहूर्त्त | 125-126 |
| 44. | विविध मुहूर्तों का विचार | 126-137 |
| 45. | खात व काकिणी विचार | 137 |
| 46. | विभिन्न शुभाशुभ योग विचार | 138 |
| 47. | गण्डमूल बोधक चक्र | 138 |
| 48. | षोडश कक्ष विचार | 138 |
| 49. | विंशोत्तरी दशा-अन्तरदशा चक्र | 139 |
| 50. | योगिनी दशा-अन्तरदशा चक्र | 139 |
| 51. | ग्रहमैत्री एवं उच्च-नीच विचार | 139 |
| 52. | कुण्डलीस्थ ग्रह फल | 140 |
| 53. | गोचर वश ग्रह फल | 141 |
| 54. | वर्ष-कुण्डली के ग्रह फल | 141 |
| 55. | शतपद चक्र | 142 |
| 56. | मेलापक विचार | 143 |
| 57. | मेलापक सारिणी | 144-147 |
| 58. | वर्षफल निर्माण विधि | 148-152 |
| 59. | गोदान विधि | 153-158 |
| 60. | यज्ञोपवीत धारण विधि | 158-159 |
| 61. | सन्ध्याविधि | 160-164 |
| 62. | षोडशोपचार पूजन विधि | 165-171 |
| 63. | तर्पण प्रयोग | 171-176 |
| 64. | पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त, रुद्रसूक्त | 177-178 |
| 65. | सूर्योदय व इष्टकाल साधन | 178-180 |
| 66. | इष्टस्थान का तिथ्यादिमान साधन | 180-181 |
| 67. | चौघड़िया मुहुर्त | 182 |
| 68. | अग्निवास व शिववास विचार | 182 |
| 69. | गण्डमूल नक्षत्र-चरण फल | 182 |
| 70. | ग्रहदान वस्तुएं व अङ्गस्फुरणफल | 183 |
| 71. | नवग्रह शान्ति उपाय | 184 |

## मङ्गलवाक्

सर्वविद्या की राजधानी के अधिष्ठाता एवं सभी विद्याओं के गुरु बाबा विश्वनाथ के अनुग्रह से नैसर्गिक शोध संस्था विगत छह वर्षों से नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग का प्रकाशन करती आ रही है। इस वर्ष संस्था विक्रम संवत् 2078 के पञ्चाङ्ग का प्रकाशन वास्तुशास्त्र विभाग, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) नई दिल्ली के साथ संयुक्त तत्त्वावधान में कर रही है। इस महनीय अवसर पर मैं संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

भारतीय पद्धति से दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का निर्माण एवं प्रकाशन नैसर्गिक शोधसंस्था का मुख्य उद्देश्य रहा है। भारतीय दैवज्ञों के सिद्धान्तों का सदैव मैं आदर करता रहा हूँ। इसीलिए आचार्यो के निर्देशानुसार सूर्यसिद्धान्त में अपेक्षित परिष्कारों के साथ उसी सिद्धान्त के अनुसरण का पक्षपाती रहा हूँ। आचार्यों के वचन हमें नित्य नये परिष्कारों के लिए प्रेरित करते हैं-

सौरोऽर्कोऽपि विधूच्चमङ्ककलिको नाब्जस्तमस्तवार्यज-
स्तेभ्यः स्याद्ग्रहणादिदृग्समभियं प्रोक्ता मया सा तिथिः।
ग्राह्या मङ्गलधर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समाऽ-
थापेक्षा यदि चालितोपकरणैस्तत्पक्षजा स्यात्तिथिः।। -तिथिचिन्तामणि।8

मुझे प्रसन्नता है कि सूर्यसिद्धान्त के परिष्कार सम्बन्धी अनुसन्धान में कई युवा विद्वान कार्यरत हैं। इसी बीच भारतीय शुद्ध पञ्चाङ्गों की आवश्यकता को देखते हुए आचार्य गणेशदैवज्ञ एवं आचार्य केतकर के मार्गो का अनुसरण करते हुए दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का प्रयास किया गया। केतकीय ग्रहगणित सिद्धान्त पर आधारित नैसर्गिक पञ्चाङ्ग शास्त्रसम्मत एवं दृक्तुल्य है। संस्था किसी भी आर्थिक लाभ की दृष्टि से नही अपितु भारतीय विद्याओं के प्रसार एवं संवर्धन हेतु कार्य करती है। इस महनीय कार्य में प्रयास करने के बाद भी कुछ त्रुटियां सम्भव हैं। अतः प्रबुद्ध पाठकगण उनका मार्जन करते हुए अवगत कराने का कष्ट करेंगे ताकि अग्रिम अङ्कों में उनका समुचित समाधान किया जा सके। सहयोग हेतु संस्था सदैव आभारी रहेगी।

मैं इस श्रमसाध्य कार्य के लिए प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी को साधुवाद देता हूँ जिन्होंने संस्था के लिए निःस्वार्थभाव से अपने व्यस्त क्षणों से समय निकाल कर इस कार्य को पूर्णता तक पहुंचाया। वास्तुशास्त्रविभाग के प्राध्यापकगण के साथ ही संस्था के सभी सदस्यों एवं सहयोगियों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। अन्त में संस्था की ओर से आगामी भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें। नववर्ष देश एवं देशवासियों के लिए सभी प्रकार से सुख एवं सम्मान में वृद्धिकारक हो। शुभमिति।

गीता जयन्ती, सं 2079
नैसर्गिक शोध संस्था, वाराणसी

प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय
संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक

## प्रास्ताविकम्

अथर्ववेद का उपवेद स्थापत्यवेद भवनादि निर्माण कला की अत्यन्त सुप्रसिद्ध प्राचीन विधा है, जो भारतीय वास्तुशास्त्र नाम से जानी जाती है। यह उत्तरवर्ती काल में वास्तुविद्या के नाम से सुविख्यात हुई। इस विद्या का उल्लेख वराहमिहिराचार्य ने बृहत्संहिता में किया है। महाराज भोजदेव ने वास्तुशास्त्र के अङ्ग के रूप में ज्योतिष को स्वीकार किया है-

सामुद्रं गणितञ्चैव ज्योतिषं छन्द एव च।
सिराज्ञानं तथा शिल्पं यन्त्रकर्मविधिस्तथा।।
एतान्यङ्गानि जानीयाद्वास्तुशास्त्रस्य बुद्धिमान्।- सं.सू. 44/3-4

वस्तुतः वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष अङ्ग-अङ्गी के रूप में परस्पर सम्बन्धित तथा एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। अतः वास्तुशास्त्र के अध्येताओं के लिए भी ज्योतिष का अध्ययन आवश्यक है। इसी कारण वास्तुशास्त्र विभाग ने अपने पाठ्यक्रम में ज्योतिष के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को स्थान दिया है। वास्तुशास्त्र में ज्योतिष के मानविधान, मुहूर्त आदि अनेक भागों का उपयोग होता है।

ज्योतिषशास्त्र का मुख्य लक्ष्य घटनाओं का पूर्वानुमान करना है, जो ग्रहों की गति एवं स्थिति के सम्यक् ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है -

ज्योतिःशास्त्रफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते।
नूनं लग्नबलाश्रितः पुनरयं तत्स्पष्टखेटाश्रयम्।। -सि.शि.गो.प्र.6

इसी ग्रहगणना के सदुद्देश्य से प्राचीन काल से ही पञ्चाङ्ग निर्माण करना ज्योतिर्विदों का प्रमुख कार्य रहा है। सम्प्रति भारतवर्ष में अनेक पद्धतियों के आधार पर पञ्चाङ्ग प्रचलित हैं, परन्तु इन पञ्चाङ्गों के तिथ्यादि मानों में विविधता के कारण व्रत, पर्वोत्सवों में भिन्नता परिलक्षित होती है। हमारे मनीषियों ने सदैव दृक्तुल्यता को व्रतपर्वोत्सवों के आचरण में प्रमाण माना है। आचार्य भास्कर कहते हैं -

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या।। सि.शि.स्प.।

इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकी ग्रहगणितीय पद्धति के आधार पर नैसर्गिक शोध संस्था द्वारा प्रख्यात ज्योतिर्विद प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय जी के मार्गनिर्देशन में नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग प्रकाशित किया जाता रहा है। इस पञ्चाङ्ग के प्रकाशन से न केवल वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, वेद एवं पौरोहित्य के छात्र,अध्यापक एवं जिज्ञासुजन अपितु भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले सामान्य लोग भी लाभान्वित होंगे। अतः मैं इस महनीय कार्य से जुड़े सभी विद्वानों को साधुवाद देते हुए सुधीजनों के करकमलों में यह ज्ञानपुष्प समर्पित कर अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। शमिति।

मकरसङ्क्रान्ति, सं.2079
नई दिल्ली

प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी
सम्पादक

ISSN– 2395-1699

निरयणं दृक्तुल्यञ्च केतकीपक्षसम्मतम्। नैसर्गिकं हि पञ्चाङ्गं भारते भासतां सदा॥

भारतीय शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य निरयण चित्रापक्षीय

# नैसर्गिक-पञ्चाङ्गं

संवत्सर-पिङ्गल

राजा-भौम

विक्रम संवत् - २०८१

कलि संवत् - ५१२५

मन्त्री-शनि

शक संवत् - १९४६

ईशवीय वर्ष - २०२४-२५

संरक्षक एवं प्रधानसम्पादक - प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय

सम्पादक - प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी

सह सम्पादक - प्रो. अशोक थपलियाल

प्रकाशक - नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, नई दिल्ली

संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक
**प्रो0 रामचन्द्र पाण्डेय**
अध्यक्षचर ज्योतिष विभाग, सङ्काय प्रमुख-सं.वि.ध.वि.सङ्काय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

**सम्पादक एवं गणितकर्त्ता (अवैतनिक)**
**प्रो0 देवीप्रसाद त्रिपाठी**
अध्यक्ष-वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि. (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली-110016
© सम्पादक

**प्रबन्ध सम्पादक (अवैतनिक)**
**प्रो0 मीनाक्षी मिश्र**
आचार्या शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

**सह सम्पादक (अवैतनिक)**
**प्रो0 अशोक थपलियाल**
आचार्य- वास्तुशास्त्र विभाग
श्री ला. ब. शा. रा. सं. वि.वि.
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

**सम्पादन सहायक (अवैतनिक)**
डॉ0 देशबन्धु, डॉ0 प्रवेश व्यास,
डॉ0 योगेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ0 दीपक वशिष्ठ,
डॉ. नवीन पाण्डेय, डॉ. मृत्युञ्जय त्रिपाठी, डॉ0 अव्यक्त रैणा

**प्रकाशक** नैसर्गिक शोध संस्था, दिल्ली इकाई, RZG-271, पालम कालोनी, नई दिल्ली
**मुख्य कार्यालय** - 38 मानस नगर कालोनी, वाराणसी-5

**प्रकाशन वर्ष** - 2024 ई., **पुष्प** -दशम **मूल्य** - रु. 80/-

पञ्चाङ्ग परिचय

**अक्षांश 28°39° N, रेखांश 77°12°E, समय 06°33°**

भारतवर्ष में सम्प्रति विभिन्न पद्धतियों से पञ्चाङ्ग निर्माण होता है। इनमें तिथ्यादि के मानों में विसंगति के कारण व्रत पर्वोत्सव में भी विसंगतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। इस विषय में ध्यातव्य है कि हमारे ऋषि-महर्षियों एवं आचार्यों ने सदैव ही दृक्तुल्य गणित का समर्थन किया है। ऋषि वसिष्ठ का कथन है कि -

**यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।**
**दृश्यते तेन पक्षेण कृर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम्॥**

इसी प्रकार प्रसिद्ध आर्षग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त कालभेदानुसार गणित में अन्तर को - **युगानां परिवर्तनेन कालभेदोऽत्र केवलः** कहकर दृक्तुल्यता का ही समर्थन करता है। यथा -

**तत्तद्गतिवशात्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।**
**प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्॥**

एवमेव भास्कराचार्य द्वितीय, आचार्य गणेश दैवज्ञ आदि प्रायः सभी सिद्धान्त ज्योतिष के महान आचार्य दृक्तुल्य गणित को ही विवाहादि संस्कारों तथा व्रत-पर्वोत्सवादि कार्यों के लिए आवश्यक मानते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह पञ्चाङ्ग दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकीय ग्रहगणितीय पद्धति पर दिल्ली के अक्षांश एवं रेखांश के अनुसार निर्मित है।

इस पञ्चाङ्ग में तिथि, नक्षत्र, योग और करण के आगे निर्दिष्ट घटी व पल तत्सम्बन्धी तिथ्यादि के सूर्योदय के बाद की स्थिति को बताता है। इसी प्रकार तिथि व नक्षत्र के घटी पल के आगे निर्दिष्ट घण्टा मिनट उसके समाप्ति काल को प्रदर्शित करता है। इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त घण्टा व मिनट मान भारतीय स्टैण्डर्ड समय अर्थात् रेडियो टाइम के अनुसार दिये गये हैं। अतः इस पञ्चाङ्ग के समय को भारत में अपनी घडी के अनुरूप मिलाकर समय का अनुपालन कर सकते हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए मान यथासम्भव विशुद्ध देने के प्रयास किए गए हैं। फिर भी यान्त्रिकीय एवं मानवीय त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं। अतः पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों पर ध्यान न देते हुए पञ्चाङ्ग के उपयोगी तथ्यों को ग्रहण करेंगे। यतः -

**गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।**
**हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥** - सम्पादक

# विषय सूची


| क्र. | विषय | पृष्ठसंख्या | क्र. | विषय | पृष्ठसंख्या | क्र. | विषय | पृष्ठसंख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | पञ्चाङ्ग परिचय | 01 | 26. | मुहूर्त हेतु काल विवरण | 106 | 51. | विंशोत्तरी दशा-अन्तरदशा चक्र | 135 |
| 2. | मङ्गलवाक् | 03 | 27. | विवाह मुहूर्त | 107-109 | 52. | योगिनी दशा-अन्तरदशा चक्र | 135 |
| 3. | प्रास्ताविकम् | 03 | 28. | वधूप्रवेश मुहूर्त | 110-111 | 53. | ग्रहमैत्री एवं उच्च-नीच विचार | 135 |
| 4. | संवत्सरादिफलम् | 04-08 | 29. | द्विरागमन मुहूर्त | 111-112 | 54. | कुण्डलीस्थ ग्रह फल | 136 |
| 5. | वार्षिकराशिफल | 08-33 | 30. | प्रसूतास्नान मुहूर्त | 112 | 55. | गोचर वश ग्रह फल | 137 |
| 6. | ग्रहों का राशि प्रवेश काल | 34 | 31. | नामकरण मुहूर्त | 112-113 | 56. | वर्ष-कुण्डली के ग्रह फल | 137 |
| 7. | सायन सूर्य राशि प्रवेश | 34 | 32. | अन्नप्राशन मुहूर्त | 113 | 57. | शतपद चक्र | 138 |
| 8. | ग्रहों का नक्षत्र प्रवेश काल | 35-36 | 33. | कर्णवेध मुहूर्त | 113-114 | 58. | मेलापक विचार | 139 |
| 9. | ग्रह मार्गी-वक्री विचार | 36 | 34. | चूडाकर्म मुहूर्त | 114 | 59. | मंगली दोष विचार | 140-141 |
| 10. | व्रत, पर्व एवं उत्सवादि | 37-41 | 35. | अक्षरारम्भ व विद्यारम्भ मुहूर्त | 114-115 | 60. | प्रात: स्मरणीय श्लोक | 141 |
| 11. | सूर्य संक्रान्ति पुण्यकाल | 39 | 36. | उपनयन मुहूर्त | 115 | 61. | मेलापक सारिणी | 142-145 |
| 12. | विविध शुभ योग | 42-43 | 37. | विपणि मुहूत | 115-116 | 62. | वर्षफल निर्माण विधि | 146-150 |
| 13. | ग्रहण विवरण (2024-25) | 44 | 38. | वस्तु क्रय-विक्रय मुहूर्त | 116-117 | 63. | गोदान विधि | 151-156 |
| 14. | ग्रहों का उदयास्त विचार | 44 | 39. | सर्वदेवप्रतिष्ठामुहूर्त | 117 | 64. | यज्ञोपवीत धारण विधि | 156-157 |
| 15. | पञ्चाङ्ग-तिथ्यादिविवरण | 45-68 | 40. | हलप्रवहण मुहूर्त | 117-118 | 65. | सन्ध्याविधि | 158-162 |
| 16. | औदयिक स्पष्टग्रह | 69-80 | 41. | बीजोप्ति मुहूर्त | 118-119 | 66. | षोडशोपचार पूजन विधि | 163-169 |
| 17. | नवग्रहस्तोत्रम् | 70 | 42. | गृहारम्भ मुहूर्त | 119-120 | 67. | तर्पण प्रयोग | 169-174 |
| 18. | अक्षांश-रेखांश सारिणी | 81-87 | 43. | गृहप्रवेश मुहूर्त | 120-121 | 68. | आमश्राद्ध | 175-176 |
| 19. | ज्योतिषमाहात्म्यम् | 87 | 44. | नवग्रह स्तोत्र | 121 | 66. | पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त, रुद्रसूक्त | 177-178 |
| 20. | क्रान्ति सारिणी | 88 | 45. | गोधूलि प्रशंसा | 122 | 67. | सूर्योदय व इष्टकाल साधन | 178-180 |
| 21. | चरसारिणी | 89-90 | 46. | विविध मुहूर्तों का विचार | 122-133 | 68. | इष्टस्थान का तिथ्यादिमान साधन | 180-181 |
| 22. | वेलान्तर सारिणी | 91 | 47. | खात व काकिणी विचार | 133 | 69. | चौघड़िया मुहुर्त | 182 |
| 23. | दैनिक लग्नसारिणी | 92-103 | 48. | विभिन्न शुभाशुभ योग विचार | 134 | 70. | अग्निवास व शिववास विचार | 182 |
| 24. | दिल्ली अक्षांश की लग्नसारिणी | 104 | 49. | गण्डमूल बोधक चक्र | 134 | 71. | गण्डमूल नक्षत्र-चरण फल | 182 |
| | | | | | | 72. | ग्रहदान वस्तुएं व अङ्गस्फुरणफल | 183 |

## मङ्गलवाक्

सर्वविद्या की राजधानी के अधिष्ठाता एवं सभी विद्याओं के गुरु बाबा विश्वनाथ के अनुग्रह से नैसर्गिक शोध संस्था विगत छह वर्षों से नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग का प्रकाशन करती आ रही है। इस वर्ष संस्था विक्रम संवत् 2078 के पञ्चाङ्ग का प्रकाशन वास्तुशास्त्र विभाग, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) नई दिल्ली के साथ संयुक्त तत्त्वावधान में कर रही है। इस महनीय अवसर पर मैं संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

भारतीय पद्धति से दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का निर्माण एवं प्रकाशन नैसर्गिक शोधसंस्था का मुख्य उद्देश्य रहा है। भारतीय दैवज्ञों के सिद्धान्तों का सदैव मैं आदर करता रहा हूँ। इसीलिए आचार्यो के निर्देशानुसार सूर्यसिद्धान्त में अपेक्षित परिष्कारों के साथ उसी सिद्धान्त के अनुसरण का पक्षपाती रहा हूँ। आचार्यों के वचन हमें नित्य नये परिष्कारों के लिए प्रेरित करते हैं-

**सौरोऽर्कोऽपि विधूच्चमङ्ककलिको नाब्जस्तमस्तवार्यज-**
**स्तेभ्यः** स्याद्ग्रहणादिदृग्समभियं **प्रोक्ता मया सा तिथिः।**
**ग्राह्या मङ्गलधर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समाऽ-**
**थापेक्षा यदि** चालितोपकरणैस्तत्पक्षजा **स्यात्तिथिः**।।-तिथिचिन्तामणि।8

मुझे प्रसन्नता है कि सूर्यसिद्धान्त के परिष्कार सम्बन्धी अनुसन्धान में कई युवा विद्वान कार्यरत हैं। इसी बीच भारतीय शुद्ध पञ्चाङ्गों की आवश्यकता को देखते हुए आचार्य गणेशदैवज्ञ एवं आचार्य केतकर के मार्गों का अनुसरण करते हुए दृक्तुल्य पञ्चाङ्ग का प्रयास किया गया। केतकीय ग्रहगणित सिद्धान्त पर आधारित नैसर्गिक पञ्चाङ्ग शास्त्रसम्मत एवं दृक्तुल्य है। संस्था किसी भी आर्थिक लाभ की दृष्टि से नही अपितु भारतीय विद्याओं के प्रसार एवं संवर्धन हेतु कार्य करती है। इस महनीय कार्य में प्रयास करने के बाद भी कुछ त्रुटियां सम्भव हैं। अतः प्रबुद्ध पाठकगण उनका मार्जन करते हुए अवगत कराने का कष्ट करेंगे ताकि अग्रिम अङ्कों में उनका समुचित समाधान किया जा सके। सहयोग हेतु संस्था सदैव आभारी रहेगी।

मैं इस श्रमसाध्य कार्य के लिए प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी को साधुवाद देता हूँ जिन्होंने संस्था के लिए निःस्वार्थभाव से अपने व्यस्त क्षणों से समय निकाल कर इस कार्य को पूर्णता तक पहुंचाया। वास्तुशास्त्रविभाग के प्राध्यापकगण के साथ ही संस्था के सभी सदस्यों एवं सहयोगियों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। अन्त में संस्था की ओर से आगामी भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें। नववर्ष देश एवं देशवासियों के लिए सभी प्रकार से सुख एवं सम्मान में वृद्धिकारक हो। शुभमिति।

**गीता जयन्ती, सं 2080** — **प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय**
**नैसर्गिक शोध संस्था, वाराणसी** — **संरक्षक एवं प्रधान सम्पादक**

## प्रास्ताविकम्

अथर्ववेद का उपवेद स्थापत्यवेद भवनादि निर्माण कला की अत्यन्त सुप्रसिद्ध प्राचीन विधा है, जो भारतीय वास्तुशास्त्र नाम से जानी जाती है। यह उत्तरवर्ती काल में वास्तुविद्या के नाम से सुविख्यात हुई। इस विद्या का उल्लेख वराहमिहिराचार्य ने बृहत्संहिता में किया है। महाराज भोजदेव ने वास्तुशास्त्र के अङ्ग के रूप में ज्योतिष को स्वीकार किया है-

**सामुद्रं गणितञ्चैव ज्योतिषं छन्द एव च।**
**सिराज्ञानं तथा शिल्पं यन्त्रकर्मविधिस्तथा।।**
**एतान्यङ्गानि** जानीयाद्वास्तुशास्त्रस्य **बुद्धिमान्**।- सं.सू. 44/3-4

वस्तुतः वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष अङ्ग-अङ्गी के रूप में परस्पर सम्बन्धित तथा एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। अतः वास्तुशास्त्र के अध्येताओं के लिए भी ज्योतिष का अध्ययन आवश्यक है। इसी कारण वास्तुशास्त्र विभाग ने अपने पाठ्यक्रम में ज्योतिष के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को स्थान दिया है। वास्तुशास्त्र में ज्योतिष के मानविधान, मुहूर्त आदि अनेक भागों का उपयोग होता है।

ज्योतिषशास्त्र का मुख्य लक्ष्य घटनाओं का पूर्वानुमान करना है, जो ग्रहों की गति एवं स्थिति के सम्यक् ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है -

**ज्योतिःशास्त्रफलं पुराणगणकैरादेश इत्युच्यते।**
**नूनं लग्नबलाश्रितः पुनरयं तत्स्पष्टखेटाश्रयम्।।**-सि.शि.गो.प्र.6

इसी ग्रहगणना के सदुद्देश्य से प्राचीन काल से ही पञ्चाङ्ग निर्माण करना ज्योतिर्विदों का प्रमुख कार्य रहा है। सम्प्रति भारतवर्ष में अनेक पद्धतियों के आधार पर पञ्चाङ्ग प्रचलित हैं, परन्तु इन पञ्चाङ्गों के तिथ्यादि मानों में विविधता के कारण व्रत, पर्वोत्सवों में भिन्नता परिलक्षित होती है। हमारे मनीषियों ने सदैव दृक्तुल्यता को व्रतपर्वोत्सवों के आचरण में प्रमाण माना है। आचार्य भास्कर कहते हैं -

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ **खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।**
**स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या।**।सि.शि.स्प.।

इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शास्त्रसम्मत दृक्तुल्य चित्रापक्षीय केतकी ग्रहगणितीय पद्धति के आधार पर नैसर्गिक शोध संस्था द्वारा प्रख्यात ज्योतिर्विद प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय जी के मार्गनिर्देशन में नैसर्गिक-पञ्चाङ्ग प्रकाशित किया जाता रहा है। इस पञ्चाङ्ग के प्रकाशन से न केवल वास्तुशास्त्र, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, वेद एवं पौरोहित्य के छात्र,अध्यापक एवं जिज्ञासुजन अपितु भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले सामान्य लोग भी लाभान्वित होंगे। अतः मैं इस महनीय कार्य से जुडे सभी विद्वानों को साधुवाद देते हुए सुधीजनों के करकमलों में यह ज्ञानपुष्प समर्पित कर अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। शमिति।

**मकरसङ्क्रान्ति, सं.2080** — **प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी**
**नई दिल्ली** — **सम्पादक**

१ माणिक्य
२ गेहूँ
३ धेनु
४ कुसुंभ
५ सुवर्ण
६ ताम्र
७ रक्त पु.
८ मूंग
९ घी

मध्येकर्तुल व. अ. १२ कलिंगदेश काश्यप गोत्र रक्तवर्ण ४ रा. स्वा. जप ७०००



ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

१ वंशपात्र
२ तंडुल
३ कपूर
४ मोती
५ श्वेत व.
६ वृषभ
७ रौप्य
८ शंख
९ घृतकुंभ

आग्नेय्यां चतुरस्रमंडले यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण अंगुल ४ रा. कर्क- स्वामी जप ११०००



ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः

१ प्रवाल
२ गेहूँ
३ मसूर
४ वृषभ
५ ताम्र
६ गुड
७ कर पु.
८ रक्त व.
९ सुवर्ण
रक्त चंदन

दक्षिणेत्रिकोणाकारमंडले अवंतिदेश भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण १८ रा. स्वामी जप १०००० 



ॐ क्रां क्रीं क्रौंस भौमाय नमः

महोधरेदं पञ्चांग देशान्तरः। संस्कृताभीष्ट देशीयं धर्मख्याति व संस्थान

वर्ष १३७

## पञ्चांग प्रवर्तक



पं० महीधर शर्मा धर्माधिकारी

१४ फरवरी १८४६ - १५ मई १९१५

१ कन्य
२ पीतवस्त्र
३ सुवर्ण
४ कांस्य
५ मूंग
६ आज्य
७ पंचरत्न
८ दासी
९ हस्ती

ईशान्ये बाणाकारमंडले मगधदेश आत्रेयसगोत्र पीतव. ३६ रा. स्वा. अ. जप ८०००



ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

सर्वांग सुन्दर दैनिक लग्न सारणी एवं ग्रह स्पष्ट
युक्त केतकी चित्रापक्षीय ( दृग्गणित )

# श्री संवत् २०७७ का कीर्तिपञ्चांग

शकः १९४२ सन् २०२०-२०२१

प्रवर्तक पं० महीधर शर्मा धर्माधिकारी उ०धि० पं० रोहणीधर शर्मा
कर्त्ता पं० मेदिनीधर शर्मा, ध०धि० उत्तराधि० पं० पृथ्वीधर शर्मा
जिला टिहरी गढ़वाल ( उत्तराखण्ड )

१ शर्करा
२ हरिद्रा
३ अश्व
४ पीतधान्य
५ पीत व.
६ पुष्पम
७ लवण
८ कांच
९ सुवर्ण

उत्तरे दीर्घचतुरस्रमंडले अ. ६ सिंधु देश अंगिरस गोत्र पी. वर्ण ९१२ जप १९०००



ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः

१ चित्र व
२ श्वेतअश्व
३ धेनु
४ हीरा
५ रौप्य
६ सुवर्ण
७ तंडुल
८ महकनक
९ सुगंधी

पूर्वे पंचकोणमंडलाकारे २७ रा. स्वा. भो. कटकदेश भार्गवगोत्र श्वेतवर्ण जप ११०००



ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

१ माष
२ तिल
३ तैल
४ कुलित्थ
५ महिषी
६ लौह
७ दक्षिणा
८ इन्द्रनील
९ कृष्णव
१० गौ

पश्चिमे धनुषाकार मं. अ. २ सौराष्ट्र देश काश्यपगोत्र कृष्ण व. १०।११ रा. स्वामी जप २३०००



ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः

१ मेढा
२ रत्नगो
३ अश्व
४ नील व
५ कंबल
६ तिल
७ तैल
८ लौह
९ अभ्रक
१० सुना

नैऋत्ये शूर्पाकारमंडले अ. १२ राठीय शपठीनसगोत्र धूम्रवर्ण जप १८०००



ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

१ वैडूर्य
२ तिल
३ तैल
४ कंबल
५ कस्तूरी
६ शस्त्र
७ कृष्णा
८ छाग
९ गोधूम

पवायव्ये ध्वजाकार मंडले अं० आवंतिदेश जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००



ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

**समर्पणम् :** महीधरो कीर्ति पञ्चाङ्ग महाधिपति श्री १०८ सत्कीर्तिशाली महाराज कीर्तिशाह बहादुर के०सी०एस०आई० के अपरिस्मरणीय नाम से श्री संवत् १९४१ से प्रचलित है, तथा साम्प्रत में गढ़ाधिपति स्वस्ति श्री १०८ बदरीश पर्व्यापरायण परम भट्टारक श्री १०८ श्री मन्न महाराजाधिराज नरेन्द्र शाह देव- मानवेन्द्र शाह देव-मनुजयेन्द्र शाह देव की छत्रछाया में प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाता है। अत: स्वर्गीय राजर्षि की अनपरिस्मरणीय कीर्ति के उपलक्ष में भिक्षुक को यह तुच्छ भेंट ज्योतिषी वृन्द के लाभार्थ बोलांदा बदरीश के कर कमलों में सादर समर्पित है।

**पञ्चांग एवम् आद्य गणितकर्ता**
**पं० मेदिनीधर शर्मा धर्माधिकारी**
नरेन्द्रनगर, जिला टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

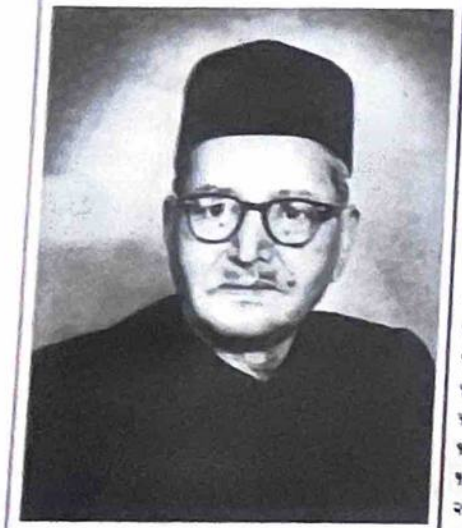



**१६ मार्च १९०० - ३१ मार्च १९६६**

## विषय सूची

| क्रम | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. | नवग्रह एवं जप संख्या | मुख पृष्ठ |
| २. | सम्पादकीय | १ |
| ३. | कीर्ति पंचाग प्रवर्तक परिचय | २ |
| ४. | राशिफल २०२०-२१ | ३-२७ |
| ५. | संवत्सरादिफलम् शनि का साढेसाती-ढैय्याविचार | २८-३० |
| ६. | मूल पंचाग | ३१-४६ |
| ७. | व्रत एवं पर्व तालिका श्री सम्वत् २०७७ | ४७ |
| ८. | सन् २०२०-२१ के सर्वार्थ सिद्धि योग एवं अन्य मुहुर्त आदि | ४८-६७ |
| ९ | विवाह मुहुर्त सम्वत् २०७७ (२०२०-२१), ग्रहण विवरण | ६८-६९ |
| १०. | गोदान विधि | ७०-७२ |
| ११. | षोडशोपचार पूजन यज्ञोपवीतधारण प्रयोग, जन्मदिन पूजनम् | ७२-७६ |
| १२. | तर्पण प्रयोग विधि | ७७-७९ |
| १३. | विविध विषय सम्पन्न सर्वोपयोगी चक्रम/मूलादि अन्य फलम् | ८० |
| १४. | तिथिवार नक्षत्र योग चक्र, वर्षफल प्रवेश सारिणी | ८१ |
| १५. | गढ़वाल लग्न सारिणी | ८२ |
| १६. | देश के मुख्य शहरों के अक्षांश-देशान्तर सारिणी | ८३ |
| १७. | उत्तराखण्ड के अक्षांश-देशान्तर सारिणी | ८४ |
| १८. | सप्तवर्ग चक्रम् | ८५ |
| १९. | त्रिवर्ग चक्रम् | ८६ |
| २०. | वर-कन्या गुण मेलाप सारिणी, होडा चक्रम सारिणी | ८७-८८ |
| २१. | क्रान्ति सारिणी एव चरसारिणी | ८९-९० |
| २२. | वेलान्तर सारिणी, तजिके हद्दा चक्रम वास्तु प्रकरण | ९१-९२ |
| २३. | संस्कार प्रकरणम्, यात्रा मुहुर्त | ९३-९६ |

## श्री महीधर कीर्ति पंचांग की विशेषतायें

यह ख्याति प्राप्त पचाग विगत १३६ वर्षों से निरन्तर प्रकाशित हो रहा है और समाज के सभी वर्गों को तदसम्बन्धित वांछित जानकारी देता रहा है। जिन माननीय ज्योतिषियों, पुरोहितों, पण्डितों और उनके यजमानों ने इसे अपनाकर मार्ग दर्शन का माध्यम बनाया उसके लिये पचांग परिवार उनका ऋणी है। इस वर्ष संवत् २०७७ का यह १३७ वाँ प्रकाशन एक नवीन कलेवर और विशेषताओं के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. प्रत्येक दिवस की लग्न सारिणी उसी पक्ष-विवरण के साथ तिथिवार घण्टा-मिनट सहित अंकित की गई है। आशा है यह ज्योतिष प्रेमियो के लिये बहुत अच्छा प्रयोग प्रमाणित होगा।
२. प्रत्येक दिवस की तिथि, नक्षत्र, योग, करण आदि को घटी-पल तथा घण्टा-मिनट में दिखाया गया है।
३. चन्द्रमा का किस राशि मे कब प्रवेश होगा, यह भी घटी-पल तथा घण्टा-मिनट में प्रदर्शित किया गया है।
४. देश/प्रदेश के प्रमुख त्यौहारो व पर्वों के नाम उसी तिथि के आगे दिखाये गये हैं। कहीं स्थानाभाव के कारण A.B.C.... तारांकित कर नीचे अंकित किये गये हैं।
५. नवरात्र आदि प्रमुख पर्वों की घटस्थापना का समय घण्टा-मिनट मे दिखाया गया है।
६. प्रत्येक संक्रान्ति का वास्तविक नाम तथा उसके प्रारम्भ तथा समाप्ति का समय भी घण्टा-मिनट मे स्पष्ट किया गया है।
७. पचांग के प्रकाशन में संस्कृत के सरल शब्दों/व्याकरण का प्रयोग हुआ है ताकि इसके उपयोगकर्ताओं को कठिनाई न हो।
८. ग्रहो की स्थिति स्पष्ट करने हेतु भी घण्टा-मिनट मे इंगित किया गया है।
९. पंचाग मे विभिन्न पर्वों और व्रतों की तालिका अलग से दी गई है।
१०. पचांग मे पूरे वर्ष के मुहूर्तों की तिथियाँ अंकित की गई है।
११. ग्रहणों का आरम्भ व समाप्ति काल भी घण्टा-मिनट मे दिया गया है।
१२. इस पंचाग के अध्ययन से लगता है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसका उपयोग कर सकता है। श्री महीधर कीर्ति पचांग के सृजनकर्ताओं का उद्देश्य इसे जन-साधारण के लिये उपयोगी बनाना था।
१३. संवत् २०७७ के प्रस्तुत पचांग से उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिये निम्नांकित विधियों का भी इसमें समावेश किया गया है- (क) गोदान (ख) जन्म-दिवस पूजन (ग) यज्ञोपवीत धारण (घ) षोडशोपचार और (च) तर्पण प्रक्रिया। आशा है श्रीमहीधर कीर्ति पंचांग अधिक उपयोगी प्रमाणित होगा। शुभम्।

**शुभकामनाओं सहित।**


महीधर कीर्ति पञ्चांग
**सम्पादकीय संरक्षक एवं प्रकाशक**
**पयोधर डंगवाल**
महीधर कीर्ति पञ्चांग कार्यालय
**"मेदिनीष"**
पो. ओ. नरेंद्रनगर, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड,
फोन 9812302564

**गणित कर्ता एवं सम्पादक**
**प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी ( अवैतनिक )**
कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय
हरिद्वार-249402

**सह सम्पादक**
**डॉ. अशोक थपलियाल ( अवैतनिक )**
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली - 110016

**शंका समाधान कर्ता**
**डॉ. पण्डित धर्मानन्द मैठाणी, ज्योतिर्विद**
फोन 09012968024

**एवं**
**पण्डित रमा नन्द डबराल**
आचार्य फलित ज्योतिष
फोन 08057080380



**महीधर कीर्ति पञ्चांग के सम्पादन और प्रकाशन में डॉ. देशबन्धु शर्मा एवं डॉ. प्रवेश व्यास**
(श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली) द्वारा दी गई अवैतनिक सेवा के लिये हम उनके आभारी है।

## सम्पादकीय

भारतवर्ष के उत्तरदिशा में देवतात्मा हिमालय पर्वत की सुन्दर उपत्यकाओं में बसे हुए उत्तराखण्ड का गढवाल क्षेत्र जहाँ एक ओर अपने प्राकृतिक सौन्दर्य से सैलानियों को आकर्षित करता है, वहीं दूसरी ओर अपने धारधामों एवं अन्य तीर्थस्थलों के कारण सदियों से ऋषि–महर्षियों एवं धार्मिकजनों को आध्यात्मिक सुखानुभूति प्रदान करता रहा है। भारत के धारधामों में प्रसिद्ध श्रीबदरीनाथ धाम की महिमा से कौन अनभिज्ञ है? जहाँ स्वयं भगवान श्रीनारायण का नित्यवास है। भगवान बदरीनारायण के तपश्चर्या में निरत स्वरूप के दर्शन कर कौन अपने को कृतकृत्य नहीं मानता ? ऐसे भगवान बदरीनारायण के साक्षात् भक्त, जिनको "कलान्दा बदरी" भी कहा जाता है, जिन पर अनुदिन प्रभु बदरीनारायण की अनुकम्पा बरसती रहती है, भक्ति, श्रद्धा एवं विश्वास की त्रिवेणी से ओत प्रोत गढवाल के महान शासकों की परम्परा ने सर्वदा भक्ति की अविरत धारा के साथ–साथ ज्ञान की परम्परा को भी आश्रय प्रदान किया है। जिस कारण गढवाल क्षेत्र में ज्योतिष, व्याकरण, साहित्य, दर्शन आदि विषयों में पण्डितों की सुदृढपरम्परा दृष्टिगोचर होती है। इसी परम्परा के संवाहक वनवालोपाख्य पं. श्री महीधर शर्मा धर्माधिकारी थे, जिन्होंने गढवाल नरेश माननीय श्री कीर्तिशाह के संरक्षकत्व में ज्योतिषशास्त्र के प्रमुख लक्ष्य शुद्ध कालगणना पद्धति को जन सामान्य तक पहुचाने हेतु प्रायः 1883 ईस्वी सन् से गढनरेश श्रीकीर्तिशाह को समर्पित कीर्तिपंचांग का ग्रहलाघवीय पद्धति से गणित कर सम्पादन एवं प्रकाशन किया। सम्भवतः यह पंचांग गढवाल का सबसे पहले प्रकाशित मुद्रित पंचाग था।

ग्रहलाघवीय पद्धति से प्रकाशित यह कीर्ति पंचांग शनैः शनैः आद्य सम्पादक पं. महीधर शर्मा जी की पुण्यस्मृति में 'महीधरकीर्तिपंचांग' के नाम से भी प्रसिद्ध हो गया परन्तु धीरे धीरे ग्रहलाघव पद्धति की दृक्तुल्यता न दिखाई देने के कारण यह पंचांग भारतीय पचांग पद्धति पर ही आधारित दृक्तुल्य केतकरीय पद्धति पर निर्मित किया जाने लगा। दृक्तुल्यता का तात्पर्य आकाशस्थ ग्रहादिकों की गणित से साधित ग्रहादिकों के साथ समता होने से है। यदि दृक्तुल्यता न हो तो गणित से साधित ग्रहण, उदयास्तादि विषय आकाशीय स्थिति से मेल नही खाते हैं। जिस कारण पंचांग मे दिये हुए समय मे ग्रहणादि प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर नहीं होते हैं। इसी प्रकार प्राचीन सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघवीय आदि पद्धतियों से निर्मित पंचांगों एवं नवीन केतकी प्रभृति पद्धति से निर्मित पंचांगो के तिथ्यादि मे 16 घटी तक का अन्तर दिखाई देने लगता है, जिस कारण व्रत, पर्व, उत्सवादि का निर्णय भी दूषित होने लगता है। इसी कारण अभी कुछ वर्ष पूर्व तक गढवाल क्षेत्र में प्रसिद्ध पंचांगों में संक्रान्ति, जन्माष्टमी आदि व्रत, पर्व, उत्सवादि मे एक–एक दिन का अन्तर प्राप्त होने लगा था। जिस कारण पण्डितवर्ग एव जनता दिग्भ्रमित सी होने लगी थी तथा ज्योतिषशास्त्र के प्रति अश्रद्धा व अविश्वास सा उत्पन्न होने लगा था। वस्तुतः यदि ग्रह दृक्तुल्य नहीं होंगे तो व्रत, पर्वादि को समुचित समय में न कर पाने के कारण उनका पुण्यफल प्राप्त नहीं हो पाता है। जबकि वेदाग ज्योतिष में शुद्ध कालगणना के महत्व को इस प्रकार कहा गया है–

**वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृताः कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः।**
**तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्।।**

– वेदांग ज्योतिष 03

वस्तुतः पंचाग गणना की मूल संकल्पना तो अक्षुण्ण है, परन्तु अधिक काल व्यतीत हो जाने पर गणित लाघव हेतु स्वल्पान्तर से छोडी हुई संख्या अधिक हो जाती है जिस कारण ग्रहगणित में भी स्थूलता दिखाई देने लगती है। इसी प्रकार युग परिवर्तन होने पर ग्रहनक्षत्रादि की स्थिति मे भी कुछ अन्तर पड जाता है, जिसे दूर करने के लिए कुछ विशेष संस्कार करने पडते है। इसी कारण दृक्तुल्यता हेतु वेधप्रक्रिया अपनाते हुए कई ग्रन्थों की रचना आचार्यों ने समय समय पर की है। अतः सूर्यसिद्धान्त में कहा गया है –

**युगे युगे महर्षीणां स्वयमेव विवस्वता।**

–सूर्यसिद्धान्त मध्यमाधिकार श्लोक 08

और भी –

**युगानां परिवर्तन कालभेदोऽत्र केवलः।।**

– सूर्यसिद्धान्त मध्यमाधिकार श्लोक 09

अतः हमारे आचार्यों ने इसी कारण दृक्तुल्यता को अधिक महत्व दिया है। प्रसिद्ध सूर्यसिद्धान्त स्वयं कहता है कि –

**तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यता ग्रहाः**
**प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्।।**

–सूर्यसिद्धान्त स्पष्टाधिकार श्लोक 14

सिद्धान्तशिरोमणि में भास्कराचार्य जी भी कहते हैं –

**यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलं स्फुटत्वम्।**
**स्यात् प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या।।**

– सिद्धान्तशिरोमणि स्पष्टाधिकार श्लोक 01

ग्रहलाघव ने व्रत–पर्वादि निर्णय मे दृग्गणितैक्यता को महत्वपूर्ण मानते हुए कहा है कि –

**सौरोऽर्कोऽपि विधूच्चमङ्कककलिकोनाब्जो गुरुस्त्वार्यजो–**
**ऽसृग्राहू च कुजं ज्ञकेन्द्रकमथार्ये सेशुभागः शनिः।**
**शौक्रं केन्द्रमजार्य्यमध्यगमितीमे यान्ति दृक्तुल्यतां,**
**सिद्धैस्तैरिह पर्वधर्मनयसत्कार्य्यादिकं त्वादिशेत्।।**

–ग्रहलाघव मध्यमाधिकार श्लोक 16

इन्हीं आचार्यवचनो को ध्यान मे रखकर प्राचीन भारतीय पंचाग गणित को अपने समय दृक्तुल्य न देखकर उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में आचार्य बापूजी केतकर ने चित्रा नक्षत्र से 180 अंश की दूरी पर स्थित आकाशीय बिन्दु को राशिचक्र का आरम्भ मानकर भारतीय अहर्गणादि विधि के आधार पर चित्रापक्षीय 'केतकी ग्रहगणित' पचांग पद्धति की रचना की। जिससे साधित ग्रह आज भी दृक्तुल्यता को प्राप्त करते हैं। अतः शास्त्रसम्मत चित्रापक्षीय केतकीय विधि के आधार पर 'महीधरकीर्ति पंचांग' का यह अंक सुधी विद्वज्जनों के करकमलों में समर्पित है।

यह पचांग 30 अंश 15 कला उत्तरी अक्षांश तथा 79 अंश 30 कला पूर्वी रेखांश पर आधारित है। इस पचांग में सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण, चन्द्रराशि प्रवेश का समय घण्टा, मिनट मे भारतीय मानक समय (स्टैण्डर्ड टाईम) के अनुसार दिये गये हैं। साथ ही व्रतपर्वादि विवरण, ग्रहों का मार्गत्व, वक्रत्व, उदयास्त, ग्रहण आदि विवरण भी भारतीय मानक समय के अनुसार ही है। अतः यह पचांग समस्त भारत में समान रूप से उपयोगी है। ग्रहों की दैनन्दिन स्थिति सूर्योदय के अनुसार है, जिसे "औदयिकाः रव्यादिस्पष्टग्रहाः" कहकर निर्दिष्ट किया गया है। इस प्रकार इस पचाग को पण्डितजन एवं सामान्य जनता के लिए अधिक उपयोगी बनाये जाने का प्रयास किया गया है। आशा है कि सुधीजन इस पचाग की मुद्रणादि त्रुटियों का परिमार्जन करते हुए उपयोगी विषयों से लाभान्वित होंगे, साथ ही बहुमूल्य सुझावों से अवगत कराने पर हमें प्रसन्नता की अनुभूति होगी।

**गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।**
**हसन्ति दुर्जनास्तत्र सज्जनाः समादधति।।**